प्राथमिक शिक्षा उन्नयन हेतु क्रियात्मक शोध उपागम

संदर्शिका

प्राथमिक/पूर्व माध्यमिक शिक्षकों के उपयोगार्थ

शैक्षिक नियोजन एवं प्रबंध विभाग

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, देहरादून

क्रियात्मक शोध

विद्यालयीय शिक्षा में सुधार हेतु क्रियात्मक शोध उपागम

शोध आख्या सारांश

LIBRARY & DOCUMENTATION CENTRE
National Institute of Educational
Planning and Administration.
17-B, Sri Aurobindo Marg,
New Delhi-110016
DOC, No.
Date

शैक्षिक नियोजन एवं प्रबंध विभाग

DIET

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान

देहरादून

संरक्षक : **श्री शरदेन्दु**
निदेशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवम् प्रशिक्षण परिषद
उ.प्र. लखनऊ

निर्देशन : **श्रीमती लक्ष्मी भारद्वाज**
प्राचार्य
डायट, देहरादून

सम्पादक मण्डल :
1. **सुश्री माधुरी नेगी**
(वरिष्ठ प्रवक्ता)
2. **आर.बी. सिंह**
(प्रवक्ता)
3. **डा. मोहन सिंह बिष्ट**
(सांख्यिकीकार)
शैक्षिक नियोजन एवम् प्रबंध विभाग

सहयोग :
1. **श्री शूरवीर सिंह शाह**
प्रवक्ता
शैक्षिक तकनीकी विभाग
2. **श्री बी.एल. बड़थ्वाल**
प्रवक्ता
पाठ्यक्रम एवं मूल्यांकन विभाग

क्रियात्मक शोध उपागम के क्रियान्वयन हेतु कार्ययोजना

'नियोजन'

उपागम : 1. परियोजना उपागम **Project Approach**
2. लैब एरिया उपागम **Lab Area Approach**

1. शीर्षक : क्रियात्मक शोध उपागम

2. विशिष्ट उद्देश्य : विद्यालयीय शिक्षा में सुधार हेतु विद्यालय की शैक्षिक एवं भौतिक समस्याओं के निदानार्थ प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक शिक्षकों में क्रियात्मक शोध उपागम की दक्षता विकसित करना।

3. विशिष्ट क्षेत्र : लैब एरिया के प्राथमिक / पूर्व माध्यमिक विद्यालय / सहसपुर विकासखण्ड के प्रा. / पूर्व माध्यमिक विद्यालय —न्यादर्श (25 विद्यालय)

4. विशिष्ट लाभार्थ : प्राथमिक एवं पूर्व मा. वि. के प्र.अ. / शिक्षक।

5. विशिष्ट तकनीक :

(क)	(ख) विशिष्ट विधियां
1. हार्डवेयर	1. सर्वेक्षण
2. साफ्टवेयर	2. प्रशिक्षण
3. प्रबन्धकीय	3. अनुश्रवण
	4. सेमिनार

6. विशिष्ट एवं सुनिश्चित संगठनात्मक ढांचा :

1. श्रीमती लक्ष्मी भारद्वाज	(प्राचार्य)
2. माधुरी नेगी	(वरिष्ठ प्रवक्ता), शै.नि. एवं प्र. विभाग
3. आर.बी. सिंह	(प्रवक्ता), शै.नि. एवं प्र. विभाग
4. डा. मोहन सिंह बिष्ट	(सांख्यिकीकार), शै.नि. एवं प्र. विभाग
5. शूरवीर सिंह शाह	(प्रवक्ता), शै. तकनीकी विभाग
6. वी.एल. बड़थ्वाल	(प्रवक्ता), मू. एवं पाठ्य विभाग
7. श्रीमती जानकी तिवारी	(लिपिक), शै.नि. एवं प्र. विभाग

7. सुनिश्चित समयावधि
- जुलाई 99 से दिसम्बर 99 तक।
- प्रशिक्षण संदर्शिका निर्माण — जुलाई 99।
- संदर्शिका प्रकाशन एवं प्रशासन — अगस्त 99।
- प्रशिक्षण कार्यक्रम — सितम्बर 7, 8 एवं 9, 99

– अनुश्रवण – अक्टूबर, नवम्बर, 99
– निष्कर्ष लेखन कार्यशाला – 4 जनवरी 2000
– सेमिनार 15 फरवरी 2000
– प्रकाशन – फरवरी/मार्च 2000

8. **सुनिश्चित व्यय धारा – (अनुमानित)**

1.	संदर्शिका निर्माण तथा प्रकाशन –	रु. 6,000.00
2.	प्रशिक्षण कार्यशाला –	रु. 5,000.00
3.	अनुश्रवण –	रु. 4,000.00
4.	शोध आख्या सारांश का प्रकाशन –	रु. 6,000.00
5	अन्य व्यय (स्टेशनरी आदि)	रु. 1,000.00
	योग –	रु. 22,000.00

(बाइस हजार रुपये मात्र).

परियोजना के चरण

1. **अभिज्ञान :**
(परियोजना के विशिष्ट उद्देश्य की पूर्ति हेतु संभावनाओं संसाधनों की पहचान) – (परियोजना क्रियान्वयन का विस्तृत विवरण मूल प्रपत्र में अंकित है)
– मानवीय संसाधन – भौतिक संसाधन – आर्थिक संसाधन

2. **स्थापना**
(अभीचिन्हित संभावनाओं/ संसाधनो की उपलब्धता को सुनिश्चित करने के परान्त स्थापना)
– मानवीय संसाधन – भौतिक संसाधन – आर्थिक संसाधन
(परियोजना क्रियान्वयन का विस्तृत विवरण मूल प्रपत्र में अंकित है)

3. **अप्रेजल (Appraisal)**
(परियोजना के विशिष्ट उद्देश्य की पूर्ति हेतु सुनिश्चित कार्य की वैधता एवं सफलता हेतु संबंधित संस्था, व्यक्ति एवं अभिकरण का उल्लेख, परीक्षण एवं सहमति)

4. **क्रियान्वयन (Implimentation)**
(परियोजना के सुनिश्चित घटकों को सुनिश्चित समयावधि में क्रियान्वित करने हेतु उल्लेख)

5. **अनुश्रवण (Monitoring)**
(परियोजना के विशिष्ट उद्देश्य की प्राप्ति में क्रियान्वित कार्ययोजना की निरन्तरता में तथा संसाधनों की प्राप्ति में संभावित बाधाओं का उल्लेख करना तथा निदानार्थ उपाय सुझाना।)

6. **मूल्यांकन (Evaluation)**
(परियोजना तैयार करने के उपरान्त प्रत्येक घटकों की सफल क्रियान्वयन का मूल्यांकन करना तथा निष्कर्ष का उल्लेख करना।)

क्रियात्मक शोध उपागम कार्यशाला
समय – सारिणी

दिनांक	10 बजे–11.30 बजे तक	11.30 बजे – 1 बजेतक	1 बजे से 1.30 तक	1.30 बजे – 3 बजे तक	3 बजे – 4.30 बजे तक
7 सितम्बर 99	उद्घाटन -- प्राचार्य पंजीयन – श्रीमती जानकी तिवारी (लिपिक) समूह निर्माण समस्या अभिज्ञान	शोध का अर्थ एवं स्वरूप शैक्षिक शोध का महत्व माधुरी नेगी (वरिष्ठ प्रवक्ता)	मध्यान्तर	शैक्षिक शोध के क्षेत्र में क्रियात्मक शोध का महत्व आर.बी.सिंह (प्रवक्ता)	क्रियात्मक शोध प्रक्रिया के सौपान एवं विशेषताएं डा. मोहन सिंह बिष्ट (सांख्यिकीकार)
8 सितम्बर 99	शोध प्रारूप का निर्धारण 1. आर.बी. सिंह (प्रवक्ता) 2. डा.मोहन सिंह बिष्ट(सांख्यिकीकार)	–शोध या समस्या के शीर्षक का चयन – आवश्यकता एवं पृष्ठभूमि का निर्धारण – उद्देश्य का निर्धारण 1. आर.बी.सिंह (प्रवक्ता) 2. डा. मोहन सिंह बिष्ट (सांख्यिकीकार)	मध्यान्तर	शोध परिकल्पना का निर्धारण शोध अध्ययन का परिसीमन विधि 1. आर.बी.सिंह (प्रवक्ता) 2. बी.एल.बड़थ्वाल (प्रवक्ता) 3. डा.मोहन सिंह बिष्ट (सांख्यिकीकार) साहित्य	आंकड़ों का विश्लेषण निष्कर्ष निकालना अनुप्रयोग प्रतिवेदन प्रस्तुतीकरण 1. आर.बी.सिंह (प्रवक्ता) 2. एस.एस.शाह (प्रवक्ता) 3. डा. मोहन सिंह बिष्ट (सांख्यिकीकार)
9 सितम्बर 99	प्रतिभागियों द्वारा शोध प्रारूप का निर्माण – माधुरी नेगी (वरिष्ठ प्रवक्ता) – आर बी सिंह (प्रवक्ता) – एस.एस.शाह (प्रवक्ता) – बी.एल.बड़थ्वाल (प्रवक्ता) – डा.मोहन सिंह बिष्ट(सांख्यिकीकार)	समस्या निदान में शैक्षिक तकनीकी का महत्व 1. एस.एस.शाह (प्रवक्ता) शोध प्रारूप के चरणों पर चर्चा एवं पश्च--पोषण 1. आर बी सिंह (प्रवक्ता) 2. डा.मोहन सिंह बिष्ट (सांख्यिकीकार)	मध्यान्तर	कार्ययोजना निर्माण प्रतिभागियों द्वारा आर बी सिंह (प्रवक्ता) डा.मोहन सिंह बिष्ट (सांख्यिकीकार) शोध प्रारूप का प्रस्तुतिकरण 1.माधुरी नेगी (वरिष्ठ प्रवक्ता) 2.आर.बी. सिंह (प्रवक्ता) 3.डा.मोहन सिंह बिष्ट (सांख्यिकीकार)	मूल्यांकन 1. आर.बी.सिंह (प्रवक्ता) 2.बी.एल.बड़थ्वाल (प्रवक्ता) समापन (प्राचार्य)

प्राक्कथन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 की अंगीकृत करने के पश्चात् राष्ट्रीय स्तर पर जिला शिक्षा एवम् प्रशिक्षण संस्थानों के दो मुख्य उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं – (1) शिक्षा के सार्वजनीकरण की संकल्पना को मूर्त रूप देना तथा (2) शैक्षिक उपलब्धि स्तर में समानता लाना और इसका समुन्नयन करना। इन उद्देश्यों की प्राप्ति की श्रृंखला में संस्थान के योजना एवं प्रबंध संकाय द्वारा राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद उ.प्र. लखनऊ के प्रबंधकीय निर्देशन तथा राज्य शैक्षिक प्रबंधन एवं प्रशिक्षण संस्थान, उ.प्र., इलाहाबाद (सीमैट) के अकादमिक प्रकाश में "क्रियात्मक शोध उपागम" (Action Research Approach) जनपद देहरादून की प्राथमिक एवं पूर्व माध्यमिक शिक्षा की आवश्यकता के अनुरूप प्रायोगिक रूप से संस्थान की लैब एरिया में क्रियान्वित किया गया, जिसके आशातीत परिणाम परिलक्षित हुये हैं। अतः शिक्षकों द्वारा प्राप्त उपलब्धि निष्कर्षों की सार रूप में संग्रहित कर प्रकाशित करते हुए मुझे अत्यन्त हर्ष का अनुभव हो रहा है।

निस्संदेह सामाजिक वर्ग संरचना और अधिगम के लिये उसमें निहित संभावनाओं के अध्ययनों ने यह स्पष्ट किया है कि सीखने के लिये मात्र बौद्धिक क्षमता की विभिन्नताओं की तुलना में सीखने के मार्गों में कहीं अधिक भिन्नताएं हैं। अतः शिक्षकों के लिये यह उचित है कि वे अधिगम को प्रोत्साहित करने के लिये वर्तमान सुलभ साधनों की अपेक्षा कहीं अधिक विविधतापूर्ण साधनों की खोज करें। अधिगम में विकास के अनुक्रमों के बारे में बहुत कुछ जानकारी बढ़ चुकी है; जिससे एक कक्षा से दूसरी कक्षा के सभी छात्रों के लिये समान विषय–वस्तु के प्रचलित प्रयोग के बारे में अनेक प्रश्न उठाये जाने लगे हैं। जीवन की विविधतापूर्ण मनोवैज्ञानिक आवश्यकताएं पाठ्य–क्रम के विषयवस्तु के चयन में मार्गदर्शक का कार्य करती हैं, और अब इनका महत्व बहुत स्पष्ट हो चुका है।

इन शोध अध्ययनों ने अधिगम तथा व्यक्तित्व निर्माण पर परस्पर सम्बन्धों के प्रभाव को स्पष्ट किया है। उन्होंने अधिगम तथा छात्रों की सम्प्राप्ति पर मनोवैज्ञानिक वातावरण के प्रभाव को स्पष्ट किया है तथा सामाजिक सांस्कृतिक तथा बौद्धिक दृष्टि से सामाजिक वर्गों तथा अधिगम के आधार पर कक्षा–कक्ष अधिकाधिक रूप में ज्यादा विषमतापूर्ण होते हैं। अनेक समस्याएं शिक्षण विधियों के कारण सामने आती हैं, जिन्हें एक समान सम्प्राप्ति स्तर तथा एक जैसे अधिगम कौशलों और विषय–वस्तु के प्रतिपादन की विधि को पहले से ही मान्य और सर्वस्वीकृत समझ लिया जाता है। इसके साथ ही यह तथ्य भी प्रकाश में आया है कि सामान्यतया कक्षा में अनुशासन बनाये रखने की कई प्रणालियां प्रचलित हैं। ये सभी विधियाँ शिक्षक केन्द्रित और अधिकारवादी हैं, इनमें समस्याएँ हल होने के बजाय बढ़ जाती हैं।

अतः शिक्षकों को और अधिक गहराई से समझने तथा नियंत्रण की विधियों, विशेष रूप से समस्यात्मक छात्रों को नियंत्रित करने की विधियों की जानने की आवश्यकता है।

मुझे आशा है कि शिक्षकों द्वारा सम्पन्न शोध अध्ययनों के विश्लेषण एवं निष्कर्ष संस्थान के अभिकर्मियों एवं जनपद देहरादून के अध्यापकों में नये उत्साह एवं गुणात्मक अभिवृद्धि के संचार का अभ्युदय करेगा।

मैं संस्थान के समस्त अभिकर्मियों को "क्रियात्मक शोध उपागम" के सफल प्रयोग पर बधाई देती हूं। मुख्यतः योजना एवं प्रबंध संकाय के सदस्यों को उनके नवाचारपरक विचारधारा की निरंतर क्रियाशीलता के लिये शुभकामना व्यक्त करती हूं तथा इस कार्य में विद्यालय स्तर पर मुख्य भूमिका निभाने के लिये सभी अध्यापकों को धन्यवाद देती हूं।

– समस्या –

खोज करें – चिन्तन करें – समाधान करें।

श्रीमती लक्ष्मी भारद्वाज
प्राचार्य
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान
देहरादून

दो शब्द

प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में जनपद देहरादून के शैक्षणिक परिप्रेक्ष्य में शिक्षा में परिणामात्मक एवम् गुणात्मक अभिवृद्धि हेतु संस्थान के योजना एवं प्रबंध संकाय द्वारा लैब एरिया उपागम से निरंतर सुनियोजित प्रयास किया जाता रहा है। इन्हीं प्रयासों के अन्तर्गत प्राथमिक एवम् पूर्व माध्यमिक विद्यालयों में व्याप्त शैक्षिक, भौतिक एवम् प्रबंधकीय समस्याओं के निदान एवम् समाधान हेतु क्रियात्मक शोध उपागम एक वैज्ञानिक विधा के रूप में संस्थान की लैब एरिया में प्रायोगिक रूप से क्रियान्वित किया गया। इस विधा के सुनियोजित क्रियान्वयन हेतु "परियोजना उपागम" **(Project Approach)** प्रयोग में लाया गया, जिसके अन्तर्गत क्रमशः आधारभूत सर्वेक्षण, संदर्शिका निर्माण कार्यशाला, त्रिदिवसीय प्रशिक्षण निष्कर्ष लेखन कार्यशाला, सेमिनार तथा प्रकाशन का कार्य समयबद्ध एवम् सुनियोजित ढंग से सम्पन्न हुआ।

शिक्षकों द्वारा तैयार किये गये शोध अध्ययनों के विश्लेषण एवम् निष्कर्ष को देखते हुए निस्सन्देह संस्थान के अभिकर्मियों में उत्साह का संचार हुआ है, फलस्वरूप इस विधा से पूरे जनपद को लाभान्वित करने के संदर्भ में वर्ष 2000–2001 की एक वर्षीय कार्ययोजना में विकासखण्ड वार शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम को नियोजित कर लिया गया है।

मैं अपने संकाय के सदस्यों के संकल्प एवम् कार्य के प्रति समर्पण के लिये धन्यवाद देती हूं तथा संस्थान के समस्त अभिकर्मियों एवम् इस कार्य में मुख्य भूमिका निभाने वाले अध्यापकों को साधुवाद अर्पित करती हूं।

अंत में मैं संस्थान की प्राचार्य के प्रति विशेष रूप से आभार व्यक्त करती हूं जिन्होंने इस कार्य में प्रबंधकीय नेतृत्व प्रदान करते हुए अपना मौलिक योगदान दिया है।

धन्यवाद,

माधुरी नेगी
वरिष्ठ प्रवक्ता
योजना एवं प्रबंध संकाय
डायट, देहरादून

"विषय सूची"

क्र.स.	प्रकरण / समस्या (लैबएरिया)	लेखक, पद	पता
1.	कक्षा 5 के बच्चों का विज्ञान विषय में रूचि न लेने के कारणों का अध्ययन एवम समाधान।	श्रीमती दिनेश कुमारी ठाकुर (सहायक अध्यापिका)	प्राथमिक विद्यालय पंडितवाड़ी, (सहसपुर), देहरादून
2.	कक्षा 5 के बच्चों के गणित विषय में दशमलव संबंधी प्रश्नों को हल करने में आ रही कठिनाईयों का अध्ययन एवं समाधान।	श्रीमती कुसुम घनसियाली (स.अ.)	प्राथमिक विद्यालय गलज्वाड़ी (सहसपुर) देहरादून
3.	कक्षा 5 के बच्चों का वर्तनी शुद्ध न होना, कारणों का अध्ययन एवं समाधान।	श्रीमती दयावन्तीमणी (प्रधानाध्यापिका)	प्राथमिक विद्यालय माजरा (II) (रायपुर) देहरादून।
4.	कक्षा 5 के बच्चों का भाषा में मात्रा की अशुद्धियों का अध्ययन एवं समाधान।	श्रीमती सुन्दरी देवी (स.अ.)	प्रा. वि. सुद्धोवाला (सहसपुर) देहरादून
5.	कक्षा 4 के बच्चों का गणित विषय में कमजोर होने के कारणों का अध्ययन एवं समाधान।	श्रीमती कृष्णा गुसाई (स.अ.)	प्रा. वि. झाझरा (सहसपुर), देहरादून
6.	कक्षा 3 के बच्चों का गणित विषय में कमजोर होने के कारणों का अध्ययन एवं समाधान।।	श्री सुन्दरलाल अग्रवाल (प्र.अ.)	प्रा. वि. जोहड़ी (ए) (सहसपुर), देहरादून
7	कक्षा 3 के बच्चों का उच्चारण शुद्ध न होने के कारणों का अध्ययन एवम समाधान।	श्रीमती वीना गुप्ता (स.अ.)	कन्या प्रा. वि. अजबपुर कला (रायपुर), देहरादून
8.	कक्षा 3 में अंग्रेजी शिक्षण में आ रही कठिनाईयों का अध्ययन एवं समाधान।	श्रीमती शान्ती देवी (प्र.अ.)	प्रा. वि (रायपुर), देहरादून
9.	बच्चों में स्वास्थ्य एवं स्वच्छता के प्रति सजगता न होने के कारणों का अध्ययन एवं समाधान	श्रीमती सुशीला रावत (प्र.अ.)	प्रा.वि. इन्दिरा नगर (सहसपुर) देहरादून
10.	6 से 11 वय वर्ग के बच्चों का शत--प्रतिशत नामांकन न होने का कारणों का अध्ययन एवं समाधान।	श्रीमती सुरेन्द्र कौर (स.अ.)	क.प्रा.वि. मोथुरावाला (रायपुर) देहरादून
11.	विद्यालय स्तर पर बालिकाओं के लिए खेल की सुविधा न होने के कारणों का अध्ययन एवं समाधान	श्रीमती विमला देवी मेहता (प्र.अ.)	प्रा.वि. अधोईवाला (रायपुर) देहरादून

12.	कक्षा 1 में अध्ययनरत बच्चों में गतिशीलता एवं विद्यालय के प्रति आकर्षण न होने के कारणों का अध्ययन एवं समाधान	श्रीमती सुनीता शर्मा (स.अ.)	प्रा.वि. कौलागढ़ (सहसपुर,), देहरादून
13.	विद्यालय में कक्षाकार तथा विषयानुसार समयसारिणी का न होना, कारणों का अध्ययन एवं समाधान	श्रीमती पुष्पा कोठियाल (प्र.अ.)	प्रा. वि. मोथुरावाला () (रायपुर), देहरादून
14.	कक्षा 6 में विज्ञान शिक्षण को क्रियात्मक रूप देने में आ रही कठिनाईयों का अध्ययन एवं समाधान	श्रीमती सर्वेश्वरी (स.अ.)	पूर्व मा. कन्या विद्यालय सुद्धोवाला (सहसपुर), देहरादून
15.	कक्षा 6 में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं के अंग्रेजी विषय में कमजोर होने के कारणों का अध्ययन एवं समाधान	श्री शैलेन्द्र कुमार सिंह (प्र.अ.)	पूर्व. मा. विद्यालय कारगीग्राण्ट रायपुर, देहरादून
16.	कक्षा 7 में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं का गणित विषय में कमजोर होने के कारणों का अध्ययन एवं समाधान	श्री गिरधारी सिंह बिष्ट (प्र.अ.)	पूर्व मा. विद्यालय बंजारावाला (रायपुर) देहरादून
17.	कक्षा 7 के बच्चों का हिन्दी (भाषा) में वर्तनी की अशुद्धियों के कारणों का अध्ययन एवं समाधान	श्रीमती कुन्ती शर्मा (स.अ.)	पूर्व मा.वि. पंडितवाड़ी (सहसपुर), देहरादून
18.	कक्षा 8 के बच्चों को अंकगणित में आयतन संबंधी प्रश्नों को हल करने में आ रही कठिनाईयों का अध्ययन एवं समाधान।	श्री अनंगपाल सिंह (स.अ.)	पूर्व मा.विद्यालय प्रेमपुरमाफी
19.	कक्षा 2 के बच्चों के लिये भाषा शिक्षण में सहायक शिक्षण सामग्री के प्रयोग में आ रही कठिनाईयों का अध्ययन एवं समाधान।	श्रीमती शारदा यादव स.अ.	प्रा.वि. धरतावाला (सहसपुर), देहरादून
20.	कक्षा 4 के बच्चों को गणित विषय की मुलभूत संक्रियाओं का ज्ञान न होना, कारणों का अध्ययन एवं समाधान	श्री रणबीर सिंह नेगी (प्र.अ.)	प्रा.वि. नेहरूग्राम (रायपुर) देहरादून

शोधकर्ता का नाम : **श्रीमती दिनेश कुमारी ठाकुर**

पद : सहायक अध्यापिका

विद्यालय का नाम : प्राथमिक विद्यालय पंडितवाड़ी (सहसपुर) जनपद देहरादून

समस्या : कक्षा 5 के बच्चों का विज्ञान विषय में रूचि न लेने के कारणों का अध्ययन एवं समाधान।

समस्या के कारण जिनका निदान किया गया –

- सहायक शिक्षण सामग्री की अनुपलब्धता
- क्रियात्मक शिक्षण का अभाव
- प्रयोगात्मक क्रियाओं का शिक्षण में सम्मिलित न होना

कार्ययोजना :

- कक्षा 5 के बच्चों द्वारा सजीव एवं निर्जीव वस्तुओं की सारिणी चार्ट पर बनवाना
- पशु, पक्षियों एवं जन्तुओं के चित्र चार्ट पर बनवाना।
- संतुलित आहार की सूची चार्ट पर बनवाना
- प्रोटीन युक्त पदार्थों की सूची
- कार्बोहाइड्रेट युक्त पदार्थों की सूची
- वसायुक्त पदार्थों की सूची
- विटामिन की सूची
- संक्रामक रोग – हैजा, प्लेग, मलेरिया आदि से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी चार्ट पर सूचीबद्ध करवाना
- उपर्युक्त विकसित/ निर्मित सहायक शिक्षण सामग्री की सहायता से शिक्षण कार्य करना।
- परीक्षण एवं मूल्यांकन करना।

क्रियान्वयन – (कार्ययोजना का समयबद्ध क्रियान्वयन)

समयावधि	कार्यनीति का क्रियान्वयन
वादन–विज्ञान	
4 दिन	सजीव एवम निर्जीव वस्तुओं की सारणी बच्चों द्वारा चार्ट पर बनवायी गयी।
4 दिन	पशु पक्षियों एवम जन्तुओं के चित्र चार्ट पर बनवाया गया।
5 दिन	संतुलित आहार की सूची चार्ट पर संकलित की गयी।
10 दिन	समस्त विकसित/निर्मित सहायक शिक्षण सामग्री की सहायता से विज्ञान विषय का शिक्षण किया गया।
1 दिन	संबंधित प्रकरण/विषयवस्तु पर आधारित बच्चों की दक्षता आधारित परीक्षण एवं मूल्यांकन किया गया। **निष्कर्ष :** – बच्चों में स्वयं करके सीखने का अभ्यास हुआ। – बच्चों ने चार्ट बनाने में अत्यधिक रूचि लिया तथा साथ ही विषय वस्तु को अच्छी तरह से समझ लिया – बच्चों में प्रश्न पूछने की क्षमता का विकास हुआ। – बच्चों ने पेड़, पौधे, पशु–पक्षियों एवं जन्तुओं के विषय में ज्ञान प्राप्त किया तथा उनका संरक्षण एवंम् पालन करना सीखा – जो बच्चे अल्पार्जी एवं मन्द बुद्धि के थे उन्हें चार्ट के माध्यम से विषय–वस्तु के न्यूनतम अधिगम स्तर की सम्प्राप्ति हुई।

★ **समस्या समाधान हेतु कार्यनीति के क्रियान्वयन करने के पश्चात जो निष्कर्ष प्राप्त हुआ, उनका तुलनात्मक विवरण निम्नवत् है:–**

क्र.सं.	पूर्व की स्थिति	पश्चात की स्थिति
1.	बच्चों को विज्ञान विषय में रूचि नहीं थी।	बच्चों को विज्ञान विषय में रूचि उत्पन्न हुई।
2.	बच्चे चित्र बनाने में बहुत कम रूचि रखते थे।	कक्षा के सभी बच्चे चित्र बनाने में बहुत अधिक रूचि रखने लगे हैं।
3.	कक्षा के कमजोर बच्चे जो पढ़ने से तथा विद्यालय आने से कतराते थे।	वे बच्चे अब प्रसन्नचित्त होकर प्रतिदिन विद्यालय आते हैं।
4.	बच्चे पेड़–पौधे, जीव–जन्तु तथा पशु पक्षियों से संबंधित शिक्षण में रूचि नहीं लेते थे।	कक्षा के सभी बच्चे ऐसे विषय–वस्तु के शिक्षण में सजग एवं क्रियाशील रहते हैं।
5.	कक्षा के अधिकांश बच्चे अपने खाने–पीने की वस्तुओं पर विशेष ध्यान नहीं देते थे।	बच्चे घर पर तथा विद्यालय में अपने खान–पान एवं स्वास्थ्य पर ध्यान देने लगे हैं।
6.	बच्चों में स्वच्छता एवं सफाई के प्रति सजगता नहीं थी	बच्चे अब स्वच्छता एवं सफाई के साथ रहते हैं।

शोधकार्य अनुभवों के प्रतिफल –

1. शिक्षण कार्य सरल एवं रोचक बन गया।
2. बच्चों में रटने के बजाय समझने की प्रवृत्ति का विकास हुआ।
3. विज्ञान विषय के शिक्षण हेतु विषय–वस्तुवार सहायक शिक्षण सामग्री का विकास हुआ, जिसका प्रयोग अगले वर्ष या अन्य कक्षा के लिये किया जा सकता है।

● **शोधकर्ता का नाम व पद** : **श्रीमती कुसुम घनसियाली, (स.अ.)**

● **विद्यालय का नाम** : प्राथमिक विद्यालय गलज्वाड़ी (सहसपुर)

● **समस्या** कक्षा 5 के बच्चों के गणित विषय में दशमलव संबंधी प्रश्नों की हल करने में आ रही कठिनाईयों का अध्ययन एवं समाधान।

● **समस्या के कारण जिनका निदान किया गया** :

- बच्चों को स्थानीयमान की जानकारी नहीं हैं
- दशमलव के पूर्व तथा पश्चात के स्थानीयमान की जानकारी नहीं है।
- सामान्य अंकों का जोड़ घटाना, गुणा, भाग का अभ्यास अच्छी तरह से नहीं किया है।
- 2 से 20 तक के पहाड़ों को लिखना, पढ़ना तथा उनका गुणा भाग की क्रियाओं में अनुप्रयोग का अभाव।
- 1 से 100 तक की गिनती तथा उनका जोड़ एवं घटाने की क्रियाओं में अनुप्रयोग का अभाव।

● **कार्ययोजना** :

अवधि : 4 नवम्बर 99 से 22 दिसम्बर 99 तक
(15 मिनट अतिरिक्त प्रतिदिन)

- बच्चों को स्थानीयमान की जानकारी के लिये अभ्यास कार्य कराना।
- दशमलव के सवालों में दशमलव के पूर्व तथा पश्चात के अंकों का स्थानीयमान का अभ्यास कराना।
- सामान्य अंकों का जोड़–घटाना, गुणा, भाग के सामान्य प्रश्नों को हल करना।
- 2 से 20 तक के पहाड़े लिखना तथा अनुप्रयोग कराना।
- 1 से 100 तक गिनती लिखना, पढ़ना तथा अनुप्रयोग कराना
- जोड़ घटाना, गुणा, भाग के सामान्य प्रश्नों को हल करना।
- दशमलव के जोड़, घटाना, गुणा, भाग का अभ्यास कराना।
- परीक्षण/मूल्यांकन

● **क्रियान्वयन (दिनांक– 4 नवम्बर 99 से 21 दिसम्बर 99 तक)**

- पूर्ण संख्याओं के स्थानीय मान का अभ्यास बच्चों को कराया गया।
- दशमलव की संख्याओं के स्थानीयमान का अभ्यास बच्चों को कराया गया।
- सामान्य अंको का जोड़, घटाना, गुणा एवम् भाग के प्रश्नों को बच्चों द्वारा हल करवाया गया।
- 2 से 20 तक पहाड़े (लिखना एवम् पढ़ना) का अभ्यास बच्चों को करवाया गया।
- गुणा व भाग के प्रश्न हल करवाकर बच्चों को पहाड़ों का अनुप्रयोग करना सिखाया गया।
- 1 से 100 तक गिनती(लिखना एवम् पढ़ना) का अभ्यास एवम् जोड़ तथा घटाने के प्रश्नों को हल करवाते समय गिनती का अनुप्रयोग करना सिखाया गया।
- गुणा तथा भाग के प्रश्नों का बच्चों द्वारा हल करने का अभ्यास कराया गया।
- दशमलव का जोड़, घटाना तथा गुणा के प्रश्नों का हल बच्चों द्वारा कराया गया।
- कक्षा 5 के बच्चों का गणित विषय में सम्बन्धित जानकारियों का प्रशिक्षण/मूल्यांकन किया गयाा।

● **निष्कर्ष :**

1. कक्षा 5 के बच्चों को स्थानीय मान का ज्ञान हो गया।
2. बच्चों को दशमलव के प्रश्नों में–दशमलव के पूर्व तथा पश्चात के अंको के स्थानीयमान की जानकारी हो गयी है।
3. सामान्य अंको का जोड़, घटाना, गुणा तथा भाग के प्रश्नों को बच्चों द्वारा आसानी से हल किया गया।
4. बच्चों को 1 से 100 तक गिनती एवम् 2 से 20 तक पहाड़ा अच्छी तरह लिखना, पढ़ना एवम् अनुप्रयोग करना सीख गये।

● **समस्या समाधान हेतु कार्यनीति को क्रियान्वियन करने के पश्चात जो निष्कर्ष प्राप्त हुए उनका तुलनात्मक विवरण निम्नवत है:–**

पूर्व की स्थिति	पश्चात् की स्थिति
1. बच्चों को स्थानीय मान की जानकारी नहीं थी।	1. बच्चों को स्थानीयमान की जानकारी हो गयी।
2. बच्चों को दशमलव के पूर्व एवंम् पश्चात के अंको के स्थानीयमान की जानकारी नही थी।	2. दशमलव के पूर्व तथा पश्चात के अंको के स्थानीयमान की जानकारी हो गयी।
3. बच्चे सामान्य अंको के जोड़, घटाना, गुणा तथा भाग में त्रुटि करते थे।	3. सामान्य अंको के जोड़, घटाना, गुणा एवम भाग की क्रिया को आसानी से सही –सही हल करने लगें।
4. 1 से 100 तक गिनती को लिखने पढ़ने तथा अनुप्रयोग करने में बच्चें त्रुटि करते थे।	4. बच्चे '1 से 100 तक गिनती' विशुद्व रूप से लिखने, पढने एवम् अनुप्रयोग करने लगें है।
5. बच्चों को 2 से 20 तक पहाड़ा अच्छी तरह से लिखना, पढ़ना तथा अनुप्रयोग करना नही आता था।	5. अब 2 से 20 तक पहाड़े बच्चे लिखने, पढ़ने एवम् अनुप्रयोग करने लगे है।

● **शोध कार्य अनुभवों के प्रतिफल:–**

1. क्रियात्मक शोध उपागम बच्चों के शैक्षिक गुणवत्ता संवधर्न हेतू बहुत ही उपयोगी क्रिया है।
2. शिक्षक बच्चों की वास्तविक कठिनाईयों पर केन्द्रित होकर शिक्षण करने में समर्थ होता है, अस प्रकार कर शिक्षण बच्चों के अधिगम के लिये उपयोगी होता है।

शोधकर्ता का नाम : **श्रीमती दयावन्ती मणी** (प्रधानाध्यापिका)

विद्यालय का नाम : प्राथमिक विद्यालय माजरा नं0 2, रायपुर, जनपद देहरादून।

समस्या : कक्षा–5 के बच्चों का वर्तनी शुद्व न होना, कारणों का अध्ययन एवम् समाधान।'

समस्या के कारण जिनका निदान किया गया :

1. छात्र–छात्राओं को मात्राओं का ज्ञान न होना।
2. संयुक्त अक्षरों व शब्दों का ज्ञान न होना।
3. कठिन शब्दों को न पढ़ पाना।
4. आधे अक्षरों की पूर्ण शब्द के साथ न पढ़ पाना।
5. घर में अभिभावकों द्वारा ध्यान न देना।
6. पिछली कक्षा में हिन्दी विषय में उपलब्धि स्तर को प्राप्त किये बिना ही कक्षा 5 में प्रवेश पा जाना।
7. कक्षा में अनियमित उपस्थिति।

कार्य योजना – (प्रत्येक दिन 15 मिनट का अतिरिक्त शिक्षणकार्य करना)

1. पिछली कक्षा की कठिनाईयों को दूर करना। – 6 दिन
2. छात्र–छात्राओं को इमला लिखवाना। – 6 दिन
3. मात्राओं को लिखवाना तथा उनका अक्षरों के साथ अनुप्रयोग। – 6 दिन
4. स्थानीय बोली के प्रभाव से अशुद्ध उच्चारण वाले शब्दों का हिन्दी में शुद्ध उच्चारण करवाना। – 4दिन
5. ग्राम शिक्षा समिति की बैठक / मासिक बैठक में अभिभावकों की उपस्थिति सुनिश्चित करना तथा उन्हें संबंधित विषय के प्रति सजग बनाना।
6. परीक्षण / मूल्यांकन – 1 दिन

क्रियान्वयन – (दिनांक 6.11.99 से 5 दिसम्बर 99 तक)

1. पिछली कक्षा (कक्षा–4) में बच्चों की कठिनाईयों को दूर किया गया।
2. इमला लिखवाना एवं उनका शुद्ध उच्चारण करवाया गया।
3. मात्राओं को लिखवाया गया तथा अक्षरों के साथ अनुप्रयोग शुद्ध उच्चारण के साथ सिखाया गया।
4. स्थानीय बोली के प्रभाव के कारण अशुद्ध शब्दों के उच्चारण को शुद्ध किया गया।
5. ग्राम शिक्षा समिति की बैठक आहूत की गयी, जिसमें कक्षा 5 के बच्चों के माता–पिता एवं अभिभावकों की उपस्थिति में बच्चों की कठिनाईयों एवं उनके द्वारा किये जाने वाले समाधान सहयोग के बारे में विस्तारसे चर्चा की गयी।
6. बच्चों के व्यक्तिशः कठिनाईयों को दूर किया गया।
7. सभी बच्चों का परीक्षण/मूल्यांकन किया गया।

निष्कर्ष :

1. **बच्चों को मात्राओं** का सही एवं स्पष्ट ज्ञान हो गया हैं।
2. **बच्चे शुद्ध** उच्चारण करने लगे हैं।
3. **बच्चे कक्षा–शिक्षण** में रूचि ले रहे हैं।
4. **कक्षा में बच्चों** की उपस्थिति नियमित हो गयी हैं।
5. **अभिभावक** बच्चों की शिक्षा के प्रति सजग हुये हैं।

- **समस्या समाधान हेतु कार्यनीति का क्रियान्वयन करने के पश्चात जो निष्कर्ष प्राप्त हुये हैं, उनका** तुलनात्मक विवरण निम्नवत है –

क्र.सं.	पूर्व की स्थिति	पश्चात की स्थिति
1.	**बच्चों को मात्राओं का** सही एवं स्पष्ट ज्ञान **नहीं था।**	अब बच्चों को मात्राओं का सही सही ज्ञान हो गया।
2.	**बच्चे** पढ़ाई **में रूचि नहीं** लेते थे।	अब पढ़ाई में रूचि लेने लगे हैं।
3.	**बच्चे सामान्य बोल–चाल** की भाषा में **स्थानीय भाषा का प्रयोग** करते थे।	बच्चे हिन्दी भाषा (खड़ी बोली) में आपस में बातचीत करते हैं।
4.	**अभिभावक बच्चों के बोल** चाल अथवा उनके **द्वारा प्रयोग किये जा रहे** शब्दों के प्रति **सजग नहीं थे।**	अब अभिभावक बच्चों के द्वारा प्रयोग किये जाने वाले शब्दों पर ध्यान देने लगे हैं।
5.	**कक्षा में बच्चों की उपस्थिति** अनियमित थी।	अब बच्चों की उपस्थिति नियमित हो गयी है।

शोधकार्य अनुभवों के प्रतिफल –

1. **क्रियात्मक शोध उपागम के** प्रयोग से बच्चों की कमियों को दूर करके उन्हें **अच्छा विद्यार्थी बनाया जा सकता है।**
2. **मेरे अन्दर अपने शिक्षण कार्य** के प्रति विश्वास बढ़ा है।

शोधकर्ता का नाम : **श्रीमती सुन्दरी देवी (सहायक अध्यापिका)**

विद्यालय का नाम : प्राथमिक विद्यालय सुद्धोवाला (सहसपुर) देहरादून

समस्या : कक्षा 5 के बच्चों का भाषा में **मात्राओं की अशुद्धियों का अध्ययन एवं समाधान।**

समस्या के कारण जिनका निदान किया गया–

1. पिछली कक्षाओं में बच्चों के अक्षरों की बनावट एवं मात्राओं की अशुद्धियों **पर ध्यान न देना।**
2. क से ज्ञ तक व्यंजन **की** लिखावट एवं उच्चारण की सुस्पष्ट जानकारी।
3. मात्राओं के चिन्हों के साथ अ से अः तक स्वर अक्षरों का ज्ञान न होना।
4. श्रतुलेखन एवं सुलेख का अभ्यास न होना।

कार्ययोजना – (प्रत्येक दिन 20 मिनट अतिरिक्त कक्षा शिक्षण का आयोजन)

1. क से ज्ञ तक **सभी** अक्षरों को सुस्पष्ट ढंग से बच्चों से लिखवाना। (6 **दिन)**
2. अ से अः तक **सभी** मात्राओं को उच्चारण के साथ लिखवाना। (7 दिन)
3. अर्द्धविराम, पूर्णविराम तथा संयोजक चिन्हों का ज्ञान कराना। (7 दिन)
4. प्रत्येक दिन श्रतुलेख व सुलेख लिखवाना। (10 दिन)
5. **परीक्षण/मूल्यांकन।** (1 दिन)

क्रियान्वयन :

1. दिनांक 30.10.99 से 5.11.99 तक क से ज्ञ तक सभी अक्षरों का सुस्पष्ट **ढंग से लिखवाया गया।**
2. दिनांक 6.11.99 से 12.11.99 तक अ से अः तक मात्राओं को बच्चों द्वारा **उच्चारण सहित लिखवाया** गया।
3. दिनांक 13.11.99 से 19.11.99 तक अर्द्धविराम, पूर्णविराम, प्रश्नसूचह चि**न्ह,संबोधन तथा** संयोजक चिन्हों का अभ्यास कराया गया।
4. दिनांक 20.11.99 से 29.11.99 तक बच्चों से श्रुतलेखन करवाया गया त**था सुलेख एवं मात्राओं की** अशुद्धियों पर विशेष ध्यान दिया गया।
5. दिनांक 30.11.99 को सुलेख प्रतियोगिता सम्पन्न करायी गयी जिसका **मूल्यांकन किया गया।**

निष्कर्ष :

1. बच्चे क से ज्ञ **तक** सभी अक्षरों को सही व सुस्पष्ट ढंग से लिखने ल**गे हैं।**
2. बच्चे अ से अः **तक** मात्राओं को उच्चारण सहित सीख लिये हैं।
3. बच्चे हिन्दी के आलेख में प्रमुख चिन्हों (अर्द्धविराम, पूर्णविराम, प्रश्न**सूचक चिन्ह, संबो**धन **तथा** संयोजक) का प्रयोग करने लगे हैं।
4. बच्चों से बार–बार श्रुतलेखन कराने से मात्राओं की गलतियां कम होने लगी हैं।

समस्या समाधान हेतु कार्यनीति का क्रियान्वयन करने के पश्चात जो निष्कर्ष प्राप्त हुये हैं, उनका तुलनात्मक विवरण निम्नवत है –

क्र.सं.	पूर्व की स्थिति	पश्चात की स्थिति
1.	बच्चों के अक्षरों की बनावट सुस्पष्ट नहीं थी।	बच्चों के अक्षरों की बनावट सुन्दर एवं सुस्पष्ट हो गयी।
2.	क से ज्ञ तथा अ से अः तक अक्षरों / मात्राओं का ज्ञान अधिकांश बच्चों को नहीं था।	क से ज्ञ तक अक्षरों तथा अ से अः तक मात्राओं का ज्ञान बच्चों को हो गया है।
3.	बच्चों को प्रमुख विराम चिन्हों का ज्ञान नहीं था।	बच्चों के अर्द्धविराम, पूर्णविराम, प्रश्नसूचक चिन्ह, संबोधन एवं संयोजक चिन्हों का ज्ञान हो गया है।
4.	बच्चे श्रुतलेखन में गल्तियां करते थे।	अब बच्चे श्रुतलेखन सही–सही करने लगे हैं।

शोधकार्य अनुभवों के प्रतिफल :

1. बच्चों के शैक्षिक स्तर को ऊँचा उठाने के लिये क्रियात्मक शोध उपागम बहुत ही उपयोगी है।
2. इस विधि से शिक्षक आसानी से बच्चों की कठिनाईयों को ढूंढ़ कर उनका निवारण कर सकता है।
3. इस कार्य को करने के पश्चात मेरा शिक्षण कार्य में विश्वास बढ़ा हैं।

शोधकर्ता का नाम : श्रीमती कृष्णा गोसांई (सहायक अध्यापिका)

विद्यालय का नाम : प्राथमिक विद्यालय माझरा, (सहसपुर) जनपद, देहरादून

समस्या : कक्षा 4 के बच्चों का गणित विषय में कमजोर होने के कारणों का अध्ययन एव समाधान।

समस्या के कारण जिनका निदान किया गया :

1. बच्चों को ठीक तरह से गिनती याद न होना
2. बच्चों को ठीक तरह से पहाड़े याद न होना।
3. स्थानीय मान का ज्ञान न होना।

कार्ययोजना – (प्रत्येक दिन 20 मिनट अतिरिक्त कक्षा शिक्षण का आयोजन)

1. 1 से 100 तक गिनती लिखवाना तथा याद करवाना।
2. 2 से 20 तक पहाड़े लिखवाना तथा याद करवाना।
3. स्थानीयमान का अभ्यास करवाना।
4. जोड़–घटाना, गुणा, भाग का अभ्यास करवाना।

क्रियान्वयन (दिनांक 30.10.99 से 5.12.99 तक) :

1. बच्चों को 1 से 100 तक गिनती लिखवायी गयी, कंठस्थ करवाया गया तथा जोड़ एवं घटाने में इसका प्रयोग सिखाया गया।
2. 2 से 20 तक पहाड़े लिखवाना, याद करवाना तथा गुणा एवं भाग में अनुप्रयोग करना बच्चों को सिखाया गया।
3. स्थानीय मान का अभ्यास कराया गया।
4. जोड़–घटाना, गुणा एवं भाग का अभ्यास कराया गया।
5. बच्चों का परीक्षण/ मूल्यांकन किया गया।

निष्कर्ष :

1. बच्चों को 1 से 100 तक (गिनती) अंकों को बोलना लिखना एवं अनुप्रयोग करना आ गया है।
2. बच्चों को संख्याओं के स्थानीय मान का ज्ञान हो गया है।
3. बच्चों ने 2 से 20 तक पहाड़े बोलना, लिखना तथा अनुप्रयोग करना सीख लिये हैं।
4. बच्चे जोड़ घटाना, गुणा एवं भाग की क्रिया आसानी से करने लगे हैं।

समस्या समाधान हेतु कार्यनीति का क्रियान्वयन करने के पश्चात जो निष्कर्ष प्राप्त हुये हैं, उनका तुलनात्मक विवरण निम्नवत है –

क्र.सं.	पूर्व की स्थिति	पश्चात की स्थिति
1.	बच्चों को 1 से 100 तक गिनती अच्छी तरह याद नहीं थी।	अब बच्चे 1 से 100 तक गिनती लिखने, पढ़ने एवं अनुप्रयोग करने लगे हैं।
2.	बच्चों को स्थानीयमान का ज्ञान ठीक तरह से नहीं था।	बच्चे स्थानीयमान ठीक तरह से बताने लगे हैं।
3.	बच्चों को 2 से 20 तक पहाड़े ठीक तरह से याद नहीं था।	अब बच्चे 2 से 20 तक पहाड़ों को लिखना, बोलना, तथा अनुप्रयोग करना सीख गये हैं।
4.	बच्चों को जोड़, घटाना, गुणा, भाग अच्छी तरह से हल नहीं करना आता था।	अब बच्चे जोड़, घटाना, गुणा तथा भाग अच्छी तरह से करने लगे हैं।

शोधकार्य अनुभवों के प्रतिफल :

1. बच्चों की गणित विषय में सामान्य कठिनाईयां दूर होते ही गणित के प्रति रूचि बढ़ने लगी हैं।
2. बच्चों के शैक्षिक गुणवत्ता हेतु क्रियात्मक शोध उपागम बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुई है।
3. मैं इस उपागम का प्रयोग निरन्तर अपने शिक्षण में करूंगी।

शोधकर्ता का नाम : **श्री सुन्दरलाल अग्रवाल (प्रधानाध्यापक)**

विद्यालय का नाम : प्राथमिक विद्यालय जोहड़ी नं. 1 (सहसपुर) जनपद, देहरादून

समस्या : कक्षा 3 के बच्चों को गणित विषय में कमजोर होने के कारणों का अध्ययन एवं समाधान

समस्या के कारण जिनका निदान किया गया–

1. गिनती एवं पहाड़े याद न होना।
2. स्थानीय मान का ज्ञान न होना।
3. हासिल वाले जोड़, घटाने का सवाल न कर पाना।
4. कक्षा–कार्य एवं गृह कार्य न कर पाना।
5. अभिभावकों का सजग न होना।

कार्ययोजना :

1. गणित शिक्षण में गणित किट की सामग्री का प्रयोग करना । **(6 दिन)**
2. 1 से 100 तक गिनती का बच्चों द्वारा चार्ट बनवाना। **(4 दिन)**
3. 2 से 20 तक पहाड़ों का बच्चों द्वारा चार्ट बनवाना। **(4 दिन)**
4. स्थानीयमान की जानकारी देना। **(4 दिन)**
5. जोड़, घटाना, गुणा, भाग की गिनती। पहाड़ों के अनुप्रयोग से अभ्यास करवाना। **(6 दिन)**
6. ग्राम शिक्षा समिति की बैठक में अभिभावकों की उपस्थिति सुनिश्चित करना। **(1 दिन)**
7. परीक्षण मूल्यांकन। **(1 दिन)**

क्रियान्वयन : (प्रत्येक दिन 20 मिनट अतिरिक्त कक्षा शिक्षण दिनांक 4.11.99 से 5.12.99 तक)

1. गणित किट की सहायक सामग्री की सहायता से शिक्षण कार्य किया गया।
2. बच्चों को 1 से 100 तक गिनती कंठस्थ कराने के उपरान्त चार्ट पर लिखाया गया।
3. बच्चों को 2 सें 20 तक पहाड़े कंठस्थ कराने के उपरान्त चार्ट पर लिखाया गया।
4. बच्चों को इकाई, दहाई, सैकड़ा के स्थानीयमान की जानकारी दी गयी तथा अभ्यास कराया गया।
5. बच्चों को गिनती एवं पहाड़ों को जोड़, घटाना, गुणा एवं भाग की क्रियाओं में अनुप्रयोग सिखाया गया तथा अभ्यास कराया गया।
6. विद्यालय स्तर पर ग्राम शिक्षा समिति की बैठक में कक्षा 3 के बच्चों के अभिभावकों की बच्चों की कठिनाईयों के निवारणार्थ जानकारी दी गयी।
7. बच्चों को गणित विषय में परीक्षण/मूल्यांकन किया गयां

निष्कर्ष :

1. बच्चों को 1 से 100 तक गिनती तथा 2 से 20 तक पहाड़े याद हो गये।
2. बच्चों को स्थानीय मान के अनतर्गत इकाई, दहाई तथा सैकड़े की स्पष्ट जानकारी हो गयी।
3. बच्चे हासिल वाले जोड़ एवं घटाना सही–सही करने लगे हैं।

4. बच्चे कक्षा कार्य तथा गृह कार्य करने लगे हैं।
5. बच्चों की गणित विषय के प्रति रूचि जागृत हुयी हैं।
6. बच्चों की शिक्षा के प्रति अभिभावक सजग हुये हैं।

- **समस्या समाधान हेतु कार्यनीति का क्रियान्वयन करने के पश्चात जो निष्कर्ष प्राप्त हुये हैं, उनका तुलनात्मक विवरण निम्नवत है –**

क्र.सं.	पूर्व की स्थिति	पश्चात की स्थिति
1.	बच्चों को 1 से 100 तक गिनती तथा 2 से 20 तक पहाड़े याद नहीं थी।	अब बच्चे 1 से 100 तक गिनती तथा 2 से 20 तक पहाड़े लिखने, पढ़ने एवं अनुप्रयोग करने लगे हैं।
2.	बच्चों को स्थानीयमान का ज्ञान नहीं था।	बच्चों को स्थानीयमान का ज्ञान हो गया है।
3.	बच्चे कक्षा कार्य तथा गृह कार्य पूर्ण नहीं कर पाते थे।	बच्चे कक्षा कार्य एवं गृह कार्य पूर्ण कर लेते हैं।
4.	अभिभावक सजग नहीं थे।	अब अभिभावक अपने बच्चे की प्रगति जानने के इच्छुक रहते हैं।

शोधकार्य अनुभवों के प्रतिफल :

1. बच्चों की कठिनाईयों की जानकारी करके समयबद्ध तरीके से कार्ययोजनानुसार कार्य करने से बच्चों की शैक्षणिक गुणवत्ता में वृद्धि करना संभव है।

शोधकर्ता का नाम : **श्रीमती वीना गुप्ता (सहायक अध्यापिका)**

विद्यालय का नाम : कन्या प्राथमिक विद्यालय अजबपुर कलां (रायपुर) जनपद, देहरादून

समस्या : कक्षा 3 के बच्चों का उच्चारण शुद्ध न होने के कारणों का अध्ययन एवं समाधान

समस्या के कारण जिनका निदान किया गया :

1. पिछली कक्षा की वांछित दक्षता की सम्प्राप्ति के बिना कक्षा 3 में प्रवेश पा जाना।
2. मात्राओं की सही एवं स्पष्ट जानकारी न होना।
3. स्थानीय बोली का प्रभाव।

कार्ययोजना – (प्रत्येक दिन 20 मिनट अतिरिक्त कक्षा शिक्षण का आयोजन)

1. क से ज्ञ तक उच्चारण के साथ अक्षरों को लिखवाना। (6 दिन)
2. अ से अः तक मात्राओं को उच्चारण के साथ लिखवाना। (6 दिन)
3. संयुक्ताक्षरों को लिखवाना तथा उनका बार–बार उच्चारण करवाना। (4 दिन)
4. स्थानीय बोली से प्रभावित शब्दों का शुद्ध उच्चारण के साथ लिखवाना। (4 दिन)
5. श्रुतलेखन करवाना। (प्रत्येक दिन)
6. परीक्षण/मूल्यांकन (1 दिन)

क्रियान्वयन – (दिनांक 4.11.99 से 28.11.99 तक)

1. बच्चों को क से ज्ञ तक उच्चारण के साथ अक्षरों को लिखवाया गया तथा सभी अक्षरों के अक्षर कार्ड बनवाए गये।
2. अ से अः तक अक्षरों एवं मात्राओं को बच्चों द्वारा उच्चारण के साथ लिखवाया गया तथा अक्षर एवं मात्राओं के चिन्हों का कार्ड बनवाया गया।
3. संयुक्ताक्षरों को उच्चारण सहित बच्चों द्वारा चार्ट पर लिखवाया गा। (दिनांक 17.11.55 से 20.11.99 तक)
4. स्थानीय बोली से प्रभावित शब्दों का शुद्ध उच्चारण करते हुये चार्ट पर लिखवाया गया। (दिनांक 21.11.99 से 23.11.99 तक)
5. बच्चों से प्रत्येक दिन श्रुतलेखन तथा वांचन कराया गया। (दिनांक 23.11.99 से 26.11.99 तक)
6. दिनांक 29.11.99 को बच्चों का परीक्षण/मूल्यांकन किया गया।

निष्कर्ष :

1. बच्चें क से ज्ञ तथा अ से अः तक अक्षरों का स्पष्ट एवम सही उच्चारण करने लगे।
2. संयुक्ताक्षरों एवं कठिन शब्दों का शुद्ध उच्चारण करने लगे।
3. बच्चे स्थानीय बोली में प्रयोग किये जा रहे शब्दो एवं हिन्दी (खड़ी बोली) में प्रयोग किये जा रहे शब्दों के उच्चारण में अन्तर करने लगे हैं।

- **समस्या समाधान हेतु कार्यनीति का क्रियान्वयन करने के पश्चात जो निष्कर्ष प्राप्त हुये हैं, उनका तुलनात्मक विवरण निम्नवत है –**

क्र.सं.	पूर्व की स्थिति	पश्चात की स्थिति
1.	बच्चे श, स, ष, र, ऋ, ज्ञ आदि से बने शब्दों का उच्चारण सही एवं स्पष्ट रूप से नहीं कर पाते थे।	अब इन अक्षरों से बने शब्दों का सही एवं स्पष्ट उच्चारण करने लगे हैं।
2.	उच्चारण शुद्ध एवं स्पष्ट नहीं था।	अब शुद्ध एवं स्पष्ट उच्चारण करने लगे हैं।
3.	मात्राओं का सही ज्ञान नहीं था।	मात्राओ का ज्ञान हो गया है।

शोधकार्य अनुभवों के प्रतिफल –

1. बच्चों की कठिनाईयों के निवारणोपरान्त शिक्षण कार्य सरल हो गया है।
2. बच्चे पढ़ाई में रूचि ले रहे हैं।
3. बच्चों ने अतिरिक्त कक्षा शिक्षण में बड़े उत्साह से भाग लिया।

शोधकर्ता का नाम : **श्रीमती शान्ती देवी (प्रधानाध्यापिका)**

विद्यालय का नाम : प्रा. वि. अजबपुर खुर्द (रायपुर) जनपद, देहरादून

समस्या : कक्षा 3 में अंग्रेजी शिक्षण में आ रही कठिनाईयों का अध्ययन एवं समाधान

समस्या के कारण जिनका निदान किया गया–

1. बच्चें के लिये अंग्रेजी भाषा का परिवेश न होना।
2. अंग्रेजी भाषा–शिक्षण हेतु सहायक सामग्री का अभाव।
3. बच्चों की अनियमित उपस्थिति।

कार्ययोजना :

1. अंग्रेजी के बड़े अक्षरों को लिखवाना तथा अक्षरों का चार्ट एवं कार्ड बनवाना। (10 दिन)
2. अंग्रेजी के छोटे अक्षरों को लिखवाना तथा अक्षरों का चार्ट एवं कार्ड बनवाना। (10 दिन)
3. प्रत्येक अक्षर से बनने वाले शब्दों का उच्चारण करवाना। (10 दिन)
4. बच्चों की सहभागिता से विकसित/तैयार चार्ट एवं अक्षर कार्डो का कक्षा शिक्षण में प्रयोग करना। (10 दिन)
5. व्यावहारिक जीवन में प्रयोग किये जाने वाले शब्दों से बच्चों को तथा उनकी क्रियाओं को संबोधित करना।

क्रियान्वयन – (दिनांक 4.11.99 से 28.11.99 तक)

1. अंग्रेजी के बड़े अक्षरों को बच्चों द्वारा लिखवाया गया तथा प्रत्येक अक्षर का अक्षर कार्ड एवं सम्मिलित चार्ट बनवाया गया।
2. अंग्रेजी के छोटे अक्षरों को बच्चों द्वारा लिखवाया गया तथा अक्षरों का एक चार्ट एवम प्रत्येक अक्षर का कार्ड बनवाया गया।
3. चार्ट एवं अक्षर कार्डो की सहायता से उच्चारण करवाया गया तथा खेल विधि से याद करवाया गया।
4. प्रत्येक अक्षर से बनने वाले शब्दों का बच्चें द्वारा उच्चारण करवाया गया तथा अक्षर का शब्द से एवं शब्द का वस्तु से संबंध स्थापित कराया गया।
5. व्यवहारिक जीवन में प्रयोग होने वाले शब्दों का जैसे **(Good morning, Good day, Good night, Good bye, Sit down, Stand up, Go out, Come in, Father, Mother, Brother, Sister, Water, Fire etc.)**आदि का उच्चारण एवं अभिज्ञान करवाया गया एवं शब्द कार्ड बनवाकर कक्षा शिक्षण में प्रयोग किया गया।
6. दिनांक 15.12.99 को बच्चों का परीक्षण/मूल्यांकन किया गया।

निष्कर्ष :

1. बच्चों को अंग्रेजी के सभी अक्षरों को लिखना तथा पढ़ना आ गया।
2. बच्चे आपस में एक–दूसरे को तथा उनकी क्रियाओं को अंग्रेजी में संबोधित करने लगे।
3. अंग्रेजी भाषा शिक्षण हेतु सहायक सामग्री का संग्रह हो गया।
4. बच्चे अंग्रेंजी भाषा सीखने में रूचि लेने लगे हैं

समस्या समाधान हेतु कार्यनीति का क्रियान्वयन करने के पश्चात जो निष्कर्ष प्राप्त हुये हैं, उनका तुलनात्मक विवरण निम्नवत है –

क्र.सं.	पूर्व की स्थिति	पश्चात की स्थिति
1.	बच्चे अंग्रेज विषय में रूचि नहीं लेते।	अब बच्चे रूचि लेने लगे हैं।
2.	बच्चों को अंग्रेजी वर्णमाला का ज्ञान नहीं था।	बच्चों को अंग्रेजी वर्णमाला का ज्ञान हो गया है।
3.	अंग्रेजी भाषा शिक्षण हेतु सहायक सामग्री नहीं थी।	अब सहायक शिक्षण सामग्री का संग्रह हो गया है।

शोधकार्य अनुभवों के प्रतिफल :

1. इस कार्य को करने से मेरे अन्दर आत्मबल बढ़ा है।
2. इस विधा से कार्य करने से मैंने यह अनुभव किया कि किसी भी कठिन कार्य को समस्या कहकर नहीं छोड़ा जाना चाहिए, बल्कि उस कार्य को धैर्यपूर्वक क्रमबद्धता से पूर्ण किया जा सकता है।

शोधकर्ता का नाम : **श्रीमती सुशीला रावत (प्रधानाध्यापिका)**

विद्यालय का नाम : प्रा. वि. इन्दिरानगर गलज्वाड़ी (सहसपुर) जनपद, देहरादून

समस्या : विद्यालय के बच्चों को अस्वस्थ एवं शारीरिक रूप से कमजोर होने के कारणों का अध्ययन एवं समाधान।

समस्या के कारण जिनका निदान किया गया–

1. बच्चों का बचपन में कुपोषण का शिकार होना।
2. बच्चों की निजी स्वच्छता जैसे दांत, आंख, शरीर और वस्त्र के प्रति सजग न होना।
3. विद्यालय में सामूहिक व्यायाम, योगासन एवं खेलकूद आदि क्रियाकलापों का अभाव।
4. विद्यालय मे मन्दबुद्धि एवं शारीरिक दोष वाले बालकों का होना।
5. विद्यालय में स्वास्थ्य शिक्षा के अन्तर्गत शिक्षक, अभिभावक एवं चिकित्सक के पारस्परिक सहयोग का अभाव।

कार्ययोजना :

1. बच्चों के स्वास्थ्य का निरीक्षण करना।
2. बच्चों के निजी स्वच्छता जैसे दांत, आंख, नाक, कान शरीर एवं वस्त्रों का निरीक्षण करना।
3. संक्रामक रोग से पीड़ित बच्चों को अभिचिन्हित करना।
4. बच्चों को सन्तुलित भोजन के बारे में जानकारी देना।
5. जल, वायु और भोजन के द्वारा फैलने वाले रोगों के बारे में बच्चों को जानकारी देना।
6. बच्चों द्वारा प्रतिदिन सामूहिक व्यायाम करवाना तथा योगासनों का अभ्यास करवानां
7. बच्चों के माता–पिता तथा अभिभावकों को स्वास्थय से संबंधित समस्याओं से अवगत कराना।

क्रियान्वयन – (दिनांक 4.11.99 से 2.12.99 तक)

1. प्रार्थना स्थल पर चिकित्सक की सहायता से बच्चों के स्वास्थ्य का निरीक्षण किया गया तथा शारीरिक रूप से अस्वस्थ बच्चों को अभिचिन्हित करने के उपरान्त उनके अभिभावकों को उपचार हेतु जानकारी दी गयी।
2. प्रतिदिन प्रार्थनास्थल पर दांत, आंख, नाक, कान, शरीर एवं वस्त्रों का निरीक्षण किया गया तथा बच्चों को एवं उनके अभिभावकों को आवश्यक जानकारी दी गयी।
3. बच्चों के दूर दृष्टिदोष एवं नजदीक दृष्टिदोष चिकित्सक की सहायता से पता लगाया गया तथा बच्चों को एवं उनके अभिभावकों को आवश्यक सावधानी के निर्देश दिये गये।
4. संतुलित भोजन के विषय में बच्चों को जानकारी दी गयी।
5. बच्चें के जल, वायु और भोजन के द्वारा फैलने वाले रोगों से सम्बन्धित चार्ट बनवाया गया।
6. आसनों का अभ्यास कराया गया तथा प्रतिदिन सामूहिक व्यायाम कराया गया।
7. ग्राम शिक्षा समिति की बैठक आहूत की गयी, जिसमें बच्चों के अभिभावकों की उपस्थिति सुनिश्चित की गयी।
8. दिनांक 2.12.99 को बच्चों का परीक्षण/मूल्यांकन किया गया।

निष्कर्ष :

1. बच्चे अपने शारीरिक स्वच्छता एवं सफाई के प्रति सजग हो गये।
2. बच्चे समय से विद्यालय आने लगे तथा पूरे समय तक उपस्थित रहने लगे।
3. अभिभावक बच्चों की स्वच्छता, सफाई, संतुलित भोजन एवं उनके रोगों के उपचार हेतु प्रयासरत हैं।
4. विद्यालय में अध्ययनरत बच्चे शारीरिक एवं मानसिक रूप से चुस्त रहने लगे।
5. विद्यालय में संपादित क्रियाओं का प्रभाव बच्चों के घरेलू परिवेश पर पड़ने लगा।

समस्या समाधान हेतु कार्यनीति का क्रियान्वयन करने के पश्चात जो निष्कर्ष प्राप्त हुये हैं, उनका तुलनात्मक विवरण निम्नवत है –

क्र.सं.	पूर्व की स्थिति	पश्चात की स्थिति
1.	बच्चे विद्यालय में स्वच्छ एवं साफ होकर नहीं आते थे।	बच्चे विद्यालय में स्वच्छ एवं साफ आने लगे।
2.	बच्चे समय से विद्यालय नहीं आते थे।	अब बच्चे समय से विद्यालय आने लगे हैं।
3.	बच्चे कक्षा मे सुस्त एवं तनावग्रस्त रहते थे।	अब बच्चे कक्षा में चुस्त एवं सजग हो गये हैं।
4.	विद्यालय के अधिकांश छात्र पेटदर्द एवं सिरदर्द से बेचैन रहते थे।	बच्चे पेटदर्द एवं सिरदर्द से मुक्त हो गये हैं
5.	अभिभावक बच्चों के स्वास्थ्य एवं स्वच्छता के प्रति सजग नहीं थे।	अभिभावकों में बच्चों के स्वास्थ्य एवं स्वच्छता के प्रति सजगता है।

शोधकार्य अनुभवों के प्रतिफल :

1. शिक्षक अभिभावक संबंध में आत्मीयता आई है।
2. बच्चे के व्यैक्तिक विभिन्नताओं को जानने का अवसर मिला।
3. विद्यालय के शैक्षिक परिवेश में गुणात्मक वृद्धि हुई है।

शोधकर्ता का नाम	:	**श्रीमती सुरेन्द्र कौर (सहायक अध्यापिका)**
विद्यालय का नाम	:	कन्या प्राथमिक विद्यालय मोथरावाला (रायपुर) जनपद– देहरादून
समस्या	:	'6–11 वयवर्ग के बच्चों का शत्–प्रतिशत नामांकन न हाने के कारणों का अध्ययन एवम् समाधान।'

समस्या के कारण जिनका निदान किया गया :

1. विद्यालय में कक्षा –1 में अंग्रेजी विषय का शिक्षण न होना।
2. बच्चों को बैठने के लिए समूचित टाट–पट्टी की व्यवस्था न होना।
3. विद्यालय के भौतिक परिवेश का निरश होना।
4. शिक्षक– अभिभावक सम्बन्ध आत्मीय न होना।

कार्ययोजना :

1. कक्षा–1 तथा 2 में हिन्दी वर्णमाला के साथ बच्चों को अंग्रेजी वर्णमाला भी सिखाना।
2. पारिवारिक एवम् विद्यालयीय परिवेश में प्रयोग किये जाने वाले हिन्दी के व्यवहारिक शब्दों का प्रयोग बच्चों द्वारा अंग्रजी में करने हेतू प्रेरित करना।
3. ग्राम शिक्षा समिति की बैठक में टाट–पट्टी की व्यवस्था हेतू प्रस्ताव पारित करवाकर व्यवस्था सुनिश्चित करना।
4. अभिभावकों से सम्पर्क करना।
5. विद्यालय भवन की पुताई करवाना तथा कक्षा–कक्ष में एवम् बाहर की दीवार पर नीति एवम् उपदेशात्मक वाक्यों को लिखवाना/लिखना।

क्रियान्वयन : (दिनांक– 30–11–99 से 31–12–99 तक)

1. कक्षा 1 व 2 के बच्चों को अंग्रेजी वर्णमाला लिखना एवम् उच्चारण करना सिखाया गया।
2. दैनिक जीवन में प्रयोग किये जाने वाले व्यवहारिक शब्दों को अंग्रजी में बोलने व बात–चीत करने के लिए बच्चों की उतसाहित एवम् प्रेरित किया गया।
3. विद्यालय भवन की पुताई (सफेदी) करायी गई तथा बाहरी एवम् अन्दर के दीवारों पर उपदेशात्मक एवम् नीतिवाक्य लिखवाए गये।
4. ग्रामशिक्षा समिति की बैठक आहुत की गयी, जिसमें उन अभिभावकों की उपस्थिति सुनिश्चित की गयी जिनके बच्चे विद्यालय में नामांकित नहीं थे, या नामांकन के बाद विद्यालय में पढ़ने नहीं आ रहे थे।
5. अभिभावकों से सम्पर्क किया गया।

निष्कर्ष:

1. विद्यालय के लक्ष्यक्षेत्र में 6–11 वयवर्ग के शत्–प्रतिशत बच्चें विद्यालय में नामांकित हो गये है।
2. बच्चों तथा अभिभावकों का विद्यालय के प्रति रूझान बढ़ा है।
3. विद्यालय का शैक्षिक एवम् भौतिक परिवेश आकर्षित हुआ है।

● **समस्या समाधान हेतु कार्यनीति क्रियान्वयन के पश्चात् जो निष्कर्ष प्राप्त हुए उनका तुलनात्मक विवरण निम्नवत है:–**

क्र.सं.	पूर्व की स्थिति	पश्चात् की स्थिति
1.	बच्चों की उपस्थिति अनियमित रहती थी।	अब बच्चे नियमित विद्यालय में आने लगे है।
2.	लक्ष्य क्षेत्र के 7 बालक एवम् 9 बालिकाएं विद्यालय नहीं आते थे।	अब सभी बच्चे विद्यालय आने लगे है।
3.	लक्ष्य क्षेत्र के कुछ बच्चे अंग्रेजी भाषा शिक्षण के अभाव में माण्टेसरी विद्यालय में पढ़ते थे।	अब ये बच्चे विद्यालय में प्रवेश लेकर पढ़ रहे हैं।
4.	विद्यालय का भौतिक परिवेश नीरस था।	अब विद्यालय का भौतिक परिवेश आकर्षक हो गया है।
5.	अभिभावक सजग नहीं थे।	अभिभावकों में बच्चों की शिक्षा के प्रति सजगता आई है।

शोधकार्य अनुभवों के प्रतिफल :

1. समयवद्व कार्य के सम्पादन से समस्या का समाधान आसानी से किया जा सकता है।
2. इस विद्या से हम अपनी समस्या का समाधान स्वयं ढूंढ सकते है।

शोधकर्ता का नाम : **'श्रीमती विमला देवी मेहता (प्रधानाध्यापिका)**
विद्यालय का नाम : प्राथमिक विद्यालय अधोईवाला (रायपुर) जनपद–देहरादून।
समस्या : विद्यालय स्तर पर बालिकाओं के खेल की सुविधा न होने के कारणों का अध्ययन एवम् समाधान'।

समस्या के कारण जिनका निदान किया गयाः–

1. खेल–सामग्री का अभाव।
2. क्रीडास्थल का अभाव।
3. बालिकाओं में संकोच की भावना होना।
4. शिक्षक के उत्प्रेरण का अभाव।
5. अभिभावकों का बालिकाओं के खेल के प्रति सजग न होना।

कार्ययोजनाः

1. बालिकाओं को प्रमुख आसन एवम् व्यायाम का अभ्यास कराना।
2. गेंद, रस्सी, बैटमिन्टन आदि खेल सामग्री की व्यवस्था सुनिश्चित करना।
3. बालिकाओं को खेल के प्रभाव के बारे में जानकारी देना।
4. विद्यालय समय तथा उसके बाद बालिकाओं के खेल के लिए समय सुनिश्चित करना।
5. बालिकाओं को खो–खो, रस्सीकूद, दौड़, रिंग, कुर्सी, दौड़ आदि खेलों को सीखाना तथा विद्यालय स्तर पर प्रतियोगिता आयोजित करना।

क्रियान्वयन : (दिनांक– 5–10–99 से 30–11–99)

1. बालिकाओं के लिए प्रमुख आसनों एवम् व्यायाम का अभ्यास करवाया गया तथा सीखे हुए आसनों को चार्ट पर बनवाया गया।
2. खेल सामग्री की व्यवस्था की गयी ।
3. ग्राम्य स्तर से राष्ट्रीय स्तर तक बालिकाओं द्वारा खेल जगत में प्राप्त उपलब्धियों के बारे में जानकारी प्रदान की गयी तथा तत्सम्बन्धी सूची तैयार की गयी।
4. प्रार्थना स्थल पर सामूहिक व्यायाम एवम् आसनों का अभ्यास कराया गया।
5. विद्यालय स्तर पर रस्सीकूद, दौड, खो–खो, कुर्सी दौड़ आदि खेलों की प्रतियोगिता करायी गयी तथा खेल अवधि में अभिभावकों की भी उपस्थिति सुनिश्चित की गयी ।

निष्कर्ष :

1. बालिकाओं ने खेल प्रतियोगिताओं में उत्साहपूर्वक भाग लिया।
2. बालिकाएं शारीरिक रूप से चुस्त हुई।
3. खेल सामग्री की उपलब्धता हो गयी।
4. अभिभावक बालिकाओं को घर पर भी खेलने के लिए प्रेरित करने लगें।
5. विद्यालय के छोटे प्रांगण में खेले जाने वाले खेलों से बालिकाएं लाभान्वित हुई।

● **समस्या समाधान हेतु कार्यनीति क्रियान्वयन के पश्चात् जो निष्कर्ष प्राप्त हुए उनका तुलनात्मक विवरण निम्नवत है:–**

क्र.सं.	पूर्व की स्थिति	पश्चात् की स्थिति
1.	बालिकाएं खेल के प्रति उत्साहित नहीं थीं।	बालिकाओं में खेल के प्रति उत्साह जागृत हुआ।
2.	खेल का सामान उपलब्ध नही था।	खेल–सामग्री क्रीडा स्थल के अनुसार उपलब्ध हो गयी है।
3.	बालिकाओं मे संकोच की भावना थी।	अब बालिकाएं खेलने के लिए हिचकिचाती नहीं है।
4.	खेल के विषय में जानकारी नहीं थी ।	खेल के विषय में (सम्बन्धित) जानकारी हो गयी है।

शोधकार्य अनुभवों के प्रतिफलः

1. समयवद्व कार्ययोजना का निमार्ण करके समस्या का निदान तथा समाधान आसानी से किया जा सकता है ।
2. मै अन्य विषय में भी इस विद्या का प्रयोग करूंगी।

शोधकर्ता का नामः : **श्रीमती सुनीता शर्मा (सहायक अध्यापिका)**
विद्यालय का नामः : प्राथमिक विद्यालय कौलागढ़ न0 1(सहसपुर) जनपद–देहरादून।
समस्या : कक्षा 1 के बच्चों को खेलो द्वारा अक्षरों एवम् गिनतियों का ज्ञान न करा पाने के कारणों का अध्ययन एवम् समाधान'।

समस्या के कारण जिनका निदान किया गया :–

1. शिक्षण में खेल विधि का प्रयोग न होना।
2. शिक्षण सहायक सामग्री का अभाव।
3. विद्यालय में बच्चों को समय से न आना।
4. अभिभावकों का सजक न होना।

कार्ययोजनाः

(1) प्रार्थना स्थल पर बच्चों को रेल का खेल सिखना।
(2) मुखौटों एवम् कट आउट्स की सहायता से शेर, चूहा, खरगोश एवम् प्यासा कौआ की कहानी सुनाना।
(3) अक्षर कार्ड एवम् अंककार्ड की सहायतासे अक्षरों तथा गिनतीयों का खेल कराना।
(4) परीक्षण एवम् मूल्याकंन

क्रियान्वयन : (दिनांक 2–11–99 से 30–11–99 तक)

1. बच्चों को प्रार्थना स्थल पर रेलगाडी का खेल कराया गया।
2. ग्राम शिक्षा समिति की बैठक आहुत की गयी जिसमें कक्षा 1 के बच्चों के अभिभावकों की उपस्थिति में आवश्यक खेल के बारे में जानकारी प्रदान की गयी।
3. मुखौटों तथा कट आउटस की सहायता से शेर, चूहा, प्यासा कौवा की कहानी सुनाई गयी।
4. अक्षर कार्ड एवं अंक कार्ड की सहायता से खेल करवाया गया।
5. दिनांक 30.11.99 को बच्चों का परीक्षण/मूल्यांकन किया गया।

निष्कर्ष

1. बच्चों में गतिशीलता बढ़ी है।
2. बच्चों की सीखने के प्रति रूझान बना रहा।
3. बच्चे समय से विद्यालय आने लगे।
4. अभिभावक इस प्रकार के शिक्षण से अधिक प्रभावित हुये।

● **समस्या समाधान हेतु कार्यनीति क्रियान्वयन के पश्चात् जो निष्कर्ष प्राप्त हुए उनका तुलनात्मक विवरण निम्नवत है:–**

क्र.सं.	पूर्व की स्थिति	पश्चात् की स्थिति
1.	हिन्दी वर्णमाला के अक्षर एवं गिनतियों को परम्परागत शिक्षण से बच्चों को सीखने में कठिनाई होती थी।	बच्चे अब आसानी से हिन्दी वर्णमाला एवं गिनतियां सीख रहे हैं।
2.	बच्चे गतिशील नहीं थे।	बच्चे गतिशील हो गये हैं।
3.	अभिभावक सजग नहीं थे।	अभिभावक सजग हुये हैं।
4.	विद्यालय में बच्चे समय से उपस्थित नहीं होते थे।	अब बच्चे विद्यालय में समय से उपस्थित होते हैं तथा पूरे समय तक रहते हैं।

शोधकार्य अनुभवों के प्रतिफलः

1. खेल विधि के प्रयोग से विद्यालय के सभी बच्चों में जागरूकता उत्पन्न हुई है।
2. बच्चों में विद्यालय के प्रति जो भय बना हुआ था, समाप्त हुआ है।
3. अभिभावकों ने विशेष रूचि ली।

शोधकर्ता का नाम : **श्रीमती पुष्पा कोठियाल (प्रधानाध्यापिका)**

विद्यालय का नाम : प्राथमिक विद्यालय मोथरावाला न.1 (रायपुर) जनपद–देहरादून।

समस्या : विद्यालय में कक्षावार तथा विषयानुसार समय सारिणी का न होना, कारणों का अध्ययन एवं समाधान।

समस्या के कारण जिनका निदान किया गया :–

1. सभी पढ़ाये जाने वाले विषयों का संतुलित शिक्षण न हो पाना।
2. समयबद्ध एवं क्रमबद्ध, शिक्षण अधिगम क्रिया का अभाव।
3. विद्यालय के कार्यों में नियोजन का अभाव
4. पाठ्यक्रम एवं पाठ्य सहगामी क्रियाकलापों का समावेश न होना।

कार्ययोजनाः **समय सारिणी कक्षा 1 से 5 तक**

विद्यालय समय शीतकालीन – प्रातः 10 बजे से सायं 4 बजे तक

वादन 10.00 से 10.30 तक	कक्षा	10.30 से 11.05 तक	11.05से 11.15 तक	11.15 से 11.45 तक	11.45 से 12.20 तक	12.20 से 12.55 तक	12.55 से 1.40 तक	1.40 से 2.15 तक	2.15 से 2.50 तक	2.50 से 3.25 तक	3.25 से 4.00 तक
प्रार्थना सभा – ईश वन्दना, राष्ट्रगान, प्रतिज्ञा, सर्वधर्म प्रार्थना	1	भाषा	म ध्या ह्न	सामा.वि. सो.,म.,बु. अंग्रेजी वृ.,शु.,श.	विज्ञान सो.,म.,बु नै. शिक्षा वृ.,शु.,श.	कला सो.,म.,बु. खेल वृ.,शु.,श.	म ध्या ह्न	गणित	शा शि सो.,म.,बु व्यायाम वृ.,शु.,श.	कार्यानुभव सो.,म.,बु बाल सभा शु.,श	
	2	भाषा		सामा.वि. सो.,म.,बु. अंग्रेजी वृ.,शु.,श.	विज्ञान सो.,म.,बु. नै. शि. वृ.,शु.,श.	कला सो.,म.,बु खेल वृ.,शु.,श.		गणित	शा.शि. सो.,म.,बु व्यायाम वृ.,शु.,श.	कार्यानुभव सो.,म.,बु. बाल सभा	
	3	भाषा सो.,म.,बु श्रुति लेखन वृ.,शु.,श.		विज्ञान सो.,म.,बु. अंग्रेजी वृ.,शु.,श.	सामा. विषय वृ.,शु.,श.	कला सो.,म.,बु. संस्कृत शु.,श.		गणित	नै.शिक्षा सो.,म.,बु सुलेख वृ.,शु.,श.	कार्यानुभव सो.,म.,बु पहाडे वृ.,श बालसभा	
	4	गणित		सामा.वि. सो.,म.,बु,वृ संस्कृत शु.,श.	कला सो.,म.,बु नै.शिक्षा वृ.,शु.,श.	विज्ञान सो.,म.,बु,वृ क्रि.कार्य शु.,श		भाषा	कार्यानुभव सो.,म.,बु सुलेख वृ.,शु.,श	शा शि सो.,म.,बु व्यायाम वृ शु श	पहाडे अभ्यास बाल सभा, श
	5	भाषा		विज्ञान सो.,म.,बु. श्रुति लेख बु.,शु	नै.शिक्षा सो.,मं.,बु कला वृ.,शु.,श	अंग्रेजी सो.,मं.,बु शारि.शि. वृ.,शु.,श		गणित	सुलेख सो.,मं.,बु व्यायाम वृ.,शु.,श.	सस्कृत सो.,मं गणित (अभ्यास) बु,वृ	बाल सभा शु. श

क्रियान्वयन :

1. दिनांक 15 अक्टूबर से 30 अक्टूबर तक कक्षा 1, 2 एवं 3 में समय सारिणी को क्रियान्वित किया गया।
2. दिनांक 1 नवम्बर से 30 नम्बर तक कक्षा 4 एवं 5 में समय सारिणी का क्रियान्वयन किया गया।
3. दि. 1 दिसम्बर से 31 दिसम्बर तक कक्षा 1 से 5 तक की कक्षाओं के लिये समग्र रूप से समय सारिणी के अनुसार शिक्षण कार्य किया गया।

निष्कर्ष

1. समय–सारिणी के अनुसार शिक्षण कार्य करने के फलतः कक्षा और विद्यालय के अनुशासन में गुणात्मक वृद्धि हुई।
2. समय सारिणी के माध्यम से बच्चों में निश्चित समय से कार्य करने की आदत का निर्माण हुआ।
3. समय सारिणी के अनुसार कार्य करने के शिक्षक एवं बच्चों में विषयवार एवं क्रमबद्ध कार्य करने का अभ्यास हुआ।
4. शिक्षकों को समय–सारिणी के अनुसार शिक्षण कार्य करने में सरलता महसूस हुयी।
5. प्रत्येक विषय का प्रतिदिन शिक्षण कार्य सम्पन्न करने में सहायता मिली।

● **समस्या समाधान हेतु कार्यनीति क्रियान्वयन के पश्चात् जो निष्कर्ष प्राप्त हुए उनका तुलनात्मक विवरण निम्नवत है:–**

क्र.सं.	पूर्व की स्थिति	पश्चात् की स्थिति
1.	विद्यालय में विषयवार शिक्षण का अभाव था।	विषयवार शिक्षण हो रहा है।
2.	बच्चों में समय से कार्य करने की आदत नहीं थी।	बच्चों में समय से कार्य करने की आदत का निर्माण हुआ।
3.	पढ़ने एवं लिखने के कार्य में शिथिलता थी।	पढ़ने एवं लिखने के कार्य में गतिशीलता आई है।
4.	सभी विषयों का संतुलित शिक्षण नहीं हो पाता था।	अब सभी विषयों का संतुलित शिक्षण होने लगा है।

शोधकार्य अनुभवों के प्रतिफलः

1. समय–सारिणी के क्रियान्वयन से शिक्षक का शिक्षण कार्य स्वतः नियोजित हो जाता है।
2. सभी विषयों के समान शिक्षण से बच्चों के सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया में समय–सारिणी एक उपयोगी साधन है।

शोधकर्ता का नामः : **श्रीमती सर्वेश्वरी (सहायक अध्यापिका)**

विद्यालय का नामः : कन्या पूर्व माध्यमिक विद्यालय, सुद्दोवाला (सहसपुर), जनपद देहरादून

समस्या : कक्षा 6 में विज्ञान शिक्षण को क्रियात्मक रूप देने में आ रही कठिनाईयों का अध्ययन एवं समाधान।

समस्या के कारण जिनका निदान किया गया :

1. विज्ञान किट की सामग्री का प्रयोग न होना।
2. शिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोग न होना।
3. प्रश्नों के उत्तर याद करवाना।

कार्ययोजनाः

(1) हमारे चारों ओर होने वाले परिवर्तन –

1. तीव्र परिवर्तन
2. मंद परिवर्तन
3. आवृत्ति परिवर्तन
4. अनावृत्ति परिवर्तन

उक्त तथ्यों की संकलित सूची बच्चों द्वारा चार्ट पर बनवाना।

(2) जीव जगत; सभी प्रकार के जीव जन्तुओं तथा उनके वर्गीकरण के अनुसार बच्चों से चार्ट बनवाना ।

1. मांसाहारी
2. शाकाहारी
3. सर्वाहारी जन्तु
4. आकृति के अनुसार जीव–जन्तु
5. अण्डे देने वाले जीव–जन्तु

(3) परीक्षण/मूल्यांकन

क्रियान्वयन : (दिनांक 30–10–99 से 30–11–99 तक)

1. मैट्रिक प्रणाली का ज्ञान बच्चों को कराया गया तथा तत्सम्बन्धित चार्ट बनवाये गये।
2. "हमारे चारों ओर होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन" से सम्बन्धित चार्ट बनवाये गये तथा उनकी सहायता से शिक्षण किया गया।
3. विभिन्न जीव–जन्तुओं की जानकारी दी गई तथा उनका वर्गीकरण बच्चों द्वारा चार्ट पर करवाया गया।
4. विद्यालय परिवेश एवं घरेलू परिवेश में उपलब्ध जीव–जन्तुओं के नाम प्रकार एवं विशिष्टता के बारे में चार्ट बनवाया गया।
5. दिनांक 30.11.99 को परीक्षण/मूल्यांकन किया गया।

6. विज्ञान किट की सामग्री और उनके उपयोग से बच्चों को परिचित कराया गया।

निष्कर्ष

1. विद्यालय में विज्ञान किट सामग्री का प्रयोग होने लगा।
2. सहायक शिक्षण सामग्री द्वारा शिक्षण कार्य किया गया।
3. बच्चों द्वारा सहायक शिक्षण सामग्री का निर्माण किया गया।
4. बच्चे प्रश्नों का उत्तर स्वयं लिखने में सक्षम हो गये।
5. स्वयं करके सीखने के प्रति बच्चे उत्प्रेरित हुये।

● **समस्या समाधान हेतु कार्यनीति क्रियान्वयन के पश्चात् जो निष्कर्ष प्राप्त हुए उनका तुलनात्मक विवरण निम्नवत है:–**

क्र.सं.	पूर्व की स्थिति	पश्चात् की स्थिति
1.	बच्चे विद्यालय नियमित रूप से नहीं आते थे	बच्चे नियमित रूप से विद्यालय आने लगे हैं।
2.	बच्चों में विज्ञान विषय के प्रति रूचि नहीं थी।	बच्चे विज्ञान विषय में रूचि लेने लगे हैं।
3.	बच्चों में स्वयं करके सीखने की प्रवृत्ति नहीं थी	अब बच्चों में स्वयं करके सीखने की प्रवृत्ति जागृत हुई है।

शोधकार्य अनुभवों के प्रतिफलः

1. क्रियात्मक शोध उपागम के क्रियान्वयन से बच्चे एवं अभिभावक जागृत हुये है।
2. इसका प्रयोग अन्य विषय में भी कर सकती हूं।

शोधकर्ता का नामः : **शैलेन्द्र कुमार सिंह**

विद्यालय का नामः : पूर्व माध्यमिक विद्यालय, कारगी ग्रान्ट (रायपुर), जनपद देहरादून

समस्या : कक्षा 6 में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं का अंग्रेजी विषय में कमजोर होने के कारणों का अध्ययन एवं समाधान

समस्या के कारण जिनका निदान किया गया :

1. बच्चों की अनियमित उपस्थिति।
2. बच्चों की अंग्रेजी वर्णमाला का लिखने एवं पढ़ने का अभ्यास न होना।
3. गृह कार्य पूर्ण न कर पाना।
4. अभिभावकों को अंग्रेजी भाषा की जानकारी न होना।
5. पिछली कक्षाओं में अंग्रेजी भाषा का शिक्षण न होना।

कार्ययोजनाः

1. ग्राम शिक्षा समिति की बैठक में कक्षा 6 के बच्चों के अभिभावकों की उपस्थिति सुनिश्चित करना तथा उनकी सहायता से बच्चों की अनियमित उपस्थिति में सुधार लाना।
2. अंग्रेजी वर्णमाला पर आधारित खेल का आयोजन करना।
3. अंग्रेजी वर्णमाला (बड़े एवं छोटे अक्षर) के लिखने तथा शुद्ध उच्चारण का अभ्यास करवाना।
4. प्रत्येक अक्षर का कार्ड बनवाना तथा अक्षर से सम्बद्ध शब्द कार्ड का निर्माण बच्चों की सहभागिता से करवाना।
5. शिक्षक द्वारा अंग्रेजी भाषा शिक्षण में निर्देशात्मक शब्दों को अंग्रेजी में बोलना तथा बच्चों को उत्तर के लिये प्रेरित करना।
6. कहानी चित्रण के माध्यम से अंग्रेजी के शब्दों एवं वाक्यों का निर्माण कराना।

क्रियान्वयन : (दिनांक 4–11–99 से 31–12–99 तक)

1. ग्राम शिक्षा समिति की आहूत बैठक में कक्षा 6 के बच्चों के अभिभावकों की उपस्थिति सुनिश्चित की गई, बैठक में अंग्रेजी भाषा के शिक्षक ने अंग्रेजी भाषा के महत्व पर प्रकाश डाला। अभिभावकों द्वारा बच्चों की नियमित उपस्थिति एवं गृह कार्य पर ध्यान देने पर अपनी प्रतिबद्धता प्रदर्शित की गई।
2. अंग्रेजी वर्णमाला के कार्ड बनवाकर बच्चों को खेल विधि से बच्चों को शुद्ध उच्चारण का अभ्यास कराया गया तथा शब्द निर्माण की प्रक्रिया स्पष्ट की गई।
3. बच्चों को अंग्रेजी के बड़े अक्षर (Capital letters) एवं छोटे अक्षर (Small letters) को लिखना, उच्चारण करना तथा प्रत्येक अक्षर का रंग–बिरंगा कार्ड बनाना सिखाया गया।
4. अंग्रेजी के प्रत्येक अक्षर से सम्बद्ध या बनने वाले शब्दों को बनाना तथा उन शब्दों को लिखना, उच्चारण करना तथा शब्द कार्ड बनाना सिखाया गया।
5. कक्षा शिक्षण में निर्देशात्मक शब्दों एवं वाक्यों को शिक्षक द्वारा अंग्रेजी भाषा व्यवहृत किया गया तथा

बच्चों को अंग्रेजी भाषा में प्रतिक्रिया व्यक्त करने हेतु प्रेरित किया गया।

6. बच्चों को कहानी चित्रण एवं चार्ट के माध्यम से शिक्षण कार्य किया गया।

निष्कर्ष

1. सभी बच्चों को अंग्रेजी वर्णमाला लिखना, पढ़ना, समझना एवं अनुप्रयोग करना आ गया।
2. चार्ट, अक्षर कार्ड एवं शब्द कार्डों की सहायता से बच्चों को अक्षरों एवं शब्दों को मिलाना आ गया।
3. बच्चे अंग्रेजी भाषा को सीखने में रूचि लेने लगे।
4. अभिभावकों में सजगता आयी।

● **समस्या समाधान हेतु कार्यनीति क्रियान्वयन के पश्चात् जो निष्कर्ष प्राप्त हुए उनका तुलनात्मक विवरण निम्नवत है:–**

क्र.सं.	पूर्व की स्थिति	पश्चात् की स्थिति
1.	बच्चों कों अंग्रेजी वर्णमाला लिखना, शुद्ध उच्चारण करना नहीं आता था।	अब बच्चों को अंग्रेजी वर्णमाला लिखना, पढ़ना तथा शुद्ध उच्चारण करना आ गया है।
2.	बच्चे अंग्रेजी भाषा में बिल्कुल रूचि नहीं लेते थे।	बच्चों में अंग्रेजी भाषा के प्रति रूचि जागृत हो गई है।
3.	अभिभावक सजग नहीं थे।	अभिभावकों में सजगता आ गयी है।

शोध कार्य अनुभवों के प्रतिफलः

1. शोध कार्य से शिक्षण कार्य में मुझे बड़ी रोचकता महसूस हुई।
2. बच्चों की कठिनाईयों को अभिचिह्नित करके सम्बन्धित क्षेत्र में रूचि जागृत करने से बच्चे स्वतः सीखने लगते हैं।

शोधकर्ता का नामः : **गिरधारी सिंह बिष्ट (प्रधानाध्यापक)**

विद्यालय का नामः : पूर्व माध्यमिक विद्यालय, बंजारावाला (रायपुर), जनपद देहरादून

समस्या : कक्षा 6 में अध्ययनरत छात्रों का गणित विषय में कमजोर होने के कारणों का अध्ययन एवं समाधान

समस्या के कारण जिनका निदान किया गया :

1. पिछली कक्षा में गणित विषय में न्यूनतम अधिगम स्तर की सम्प्राप्ति न होना
2. सहायक शिक्षण सामग्री का अभाव।
3. कक्षा शिक्षण के समय अवधान केन्द्रित न होना।
4. संख्याओं को अशुद्ध लिखना व पढ़ना।
5. अभिभावकों का छात्रों के प्रति सजग न होना।

कार्ययोजनाः दिनांक 4.11.99 से 6.12.99 तक

1. पुनरावृत्ति के प्रश्नों को हल कराना।
2. कठिन संख्याओं को लिखवाना तथा उनका शुद्ध उच्चारण करवाना।
3. प्रश्नों को हल करवाते समय बच्चों के व्यवहारिक जीवन से गणितीय क्रियाओं को जोड़ना।
4. कक्षा कार्य एवं गृह कार्य की नियमित जांच करना।
5. ग्राम शिक्षा समिति की बैठक में अच्छे एवं कमजोर छात्रों के बारे में चर्चा करना।

क्रियान्वयन :

1. प्रथम सप्ताह में छात्रों को पुनरावृत्ति के प्रश्नों को हल करवाकर उनके पूर्वज्ञान को प्रभावी बनाया गया।
2. द्वितीय सप्ताह में कठिन संख्याओं के लिखने एवं उच्चारण करने में आ रही अशुद्धियों एवं त्रुटियों को दूर किया गया।
3. तृतीय सप्ताह में गणित के प्रश्नों को बच्चों के व्यवहारिक जीवन की उपयोगिता से सम्बद्ध किया गया।
4. चतुर्थ सप्ताह में गणित के छोटे–छोटे प्रश्नों का त्वरित गति से उत्तर देने के लिये बच्चों को प्रेरित किया गया।
5. कार्ययोजना के क्रियान्वयन के पश्चात बच्चों का गणित विषय में परीक्षण/ मूल्यांकन किया गया।

निष्कर्ष

1. सभी छात्र गणित विषय में रूचि लेने लगे।
2. कठिन संख्याओं को शुद्ध एवं सही लिखने व पढ़ने लगे।
3. कक्षा कार्य एवं गृह कार्य पूर्ण करने में रूचि लेने लगे।

4. बच्चे आपस में तथा शिक्षक से गणित के प्रश्नों को हल करते समय प्रश्न पूछने लगे।
5. बच्चों की उत्सुकता को देखकर अभिभावक उनकी शिक्षा के प्रति सजग हो गये।

● **समस्या समाधान हेतु कार्यनीति क्रियान्वयन के पश्चात् जो निष्कर्ष प्राप्त हुए उनका तुलनात्मक विवरण निम्नवत है:–**

क्र.सं.	पूर्व की स्थिति	पश्चात् की स्थिति
1.	पूर्व ज्ञान का अभाव था।	पूर्व ज्ञान प्रभावी हो गया
2.	कठिन संख्याओं को शुद्ध एवं सही लिखने पढ़ने का अभाव था।	संख्याओं को शुद्ध एवं सही लिखने पढ़ने लगे।
3.	कक्षा में गणित विषय के शिक्षण के समय अवधान केन्द्रित नहीं होता था।	अब बच्चे पूरी तन्मयता से गणित पढ़ने में रूचि लेने लगे।
4.	गृह कार्य के प्रति लापरवाही करते थे।	अब नियमित रूप से गृह कार्य पूर्ण कर लेते हैं।
5.	अभिभावक सजग नहीं थे।	अभिभावक सजग हुये।

शोधकार्य अनुभवों के प्रतिफलः

1. इस नयी प्रक्रिया से बच्चों की गणित विषय की कठिनाई को दूर करते समय बच्चे तथा अभिभावक बहुत ही उत्साहित थे।
2. शिक्षक इसके माध्यम से सूक्ष्म से सूक्ष्म बातों को जानने में सक्षम होता है।

शोधकर्ता का नामः : **श्रीमती कुन्ता शर्मा (सहायक अध्यापिका)**

विद्यालय का नामः : उच्च प्राथमिक विद्यालय, पंडितवाड़ी (सहसपुर), जनपद देहरादून

समस्या : कक्षा 7 के बच्चों को हिन्दी में वर्तनी की अशुद्धियों के कारणों का अध्ययन एवं समाधान।

समस्या के कारण जिनका निदान किया गया :

1. प्राथमिक कक्षाओं में मात्राओं एवं संयुक्ताक्षरों का अभ्यास न कराया जाना।
2. अक्षरों को पहचानने एवं उच्चारण करने में कठिनाई।
3. 'र' के विभिन्न रूपों को लिखने में गलती करना।
4. स, ष, श का उच्चारण एवं प्रयोग अशुद्ध एवं त्रुटिपूर्ण होना।
5. अर्द्ध अक्षरों का प्रयोग ठीक ढंग से न कर पाना।

कार्ययोजनाः

1. हिन्दी वर्णमाला (क से ज्ञ तक) लिखवाना तथा शुद्ध उच्चारण करवाना।
2. अ से अः तक की मात्राओं का उच्चारण एवं उनका प्रयोग
3. संयुक्ताक्षरों का अभ्यास
4. स, ष, श को शुद्ध एवं सही लिखना तथा उच्चारण करना।
5. अर्द्ध अक्षरों के शुद्ध एवं सही लिखना एवं उच्चारण करवाना।
6. सुलेख एवं श्रुत लेख का अभ्यास।
7. परीक्षण/मूल्यांकन

क्रियान्वयन : (दिनांक 1.11.99 से 30–11–99 तक)

1. क से ज्ञ तक सभी अक्षरों को लिखवाया एवं उच्चारण करवाया गया।
2. अ से अः तक की मात्राओं का प्रयोग शुद्ध एवं उच्चारण के साथ कराया गया।
3. 'र' विभिन्न रूपों को उच्चारण के साथ लिखवाया गया।
4. स, ष, श को उच्चारण के साथ सार्थक शब्द बनवाया गया तथा लिखवाया गया।
5. अर्द्ध अक्षरों को उच्चारण के साथ लिखवाया गया।
6. उक्त सभी सुधार किये गये तत्वों को समावेश करके श्रुतलेखन का अभ्यास कराया गया।

निष्कर्ष

1. छात्र–छात्राएं संयुक्ताक्षरों को अच्छी तरह लिखने व पढ़ने लगे हैं
2. शुद्ध उच्चारण के साथ मात्राओं का प्रयोग लिखने में सही–सही करने लगे हैं।

3. र के विभिन्न रूपों का प्रयोग तथा स, ष, श का शुद्ध उच्चारण सहित प्रयोग करने में कठिनाई नहीं होती है।
4. अर्द्ध अक्षरों का प्रयोग अच्छी तरह से करने लगे हैं।

● **समस्या समाधान हेतु कार्यनीति क्रियान्वयन के पश्चात् जो निष्कर्ष प्राप्त हुए उनका तुलनात्मक विवरण निम्नवत हैः—**

क्र.सं.	पूर्व की स्थिति	पश्चात् की स्थिति
1.	संयुक्ताक्षरों को लिखने व पढ़ने में बच्चों को कठिनाई होती थी।	अब अच्छी तरह से लिखने व पढ़ने लगे हैं
2.	मात्राओं का प्रयोग त्रुटिपूर्ण था।	अब शुद्ध एवं सही प्रयोग करने लगे हैं।
3.	र के विभिन्न रूपों का प्रयोग तथा स, ष, श का प्रयोग छात्रों द्वारा त्रुटिपूर्ण किया जाता था।	इनका प्रयोग शुद्ध एवं सही होने लगा है।
4.	अर्द्ध अक्षरों का उच्चारण एवं लिखावट गलत होता था।	अब शुद्ध एवं सही होने लगा है।

शोधकार्य अनुभवों के प्रतिफलः

1. बच्चों को कठिनाईयां दूर होने के कारण कक्षा में अनियंति उपस्थिति में सुधार हुआ।
2. बच्चों ने काफी रूचि लिया।
3. मुझे यह विधा बहुत ही अच्छा लगा।

शोधकर्ता का नामः : **श्री अनंगपाल सिंह (सहायक अध्यापक)**

विद्यालय का नामः : पूर्व माध्यमिक विद्यालय प्रेमपुर माफी (सहसपुर), जनपद देहरादून

समस्या : कक्षा 8 के अंकगणित में आयतन संबंधी प्रश्नों को हल करने में आ रही कठिनाईयों का अध्ययन एवं समाधान।

समस्या के कारण जिनका निदान किया गया :

1. मैट्रिक प्रणाली का ज्ञान न होना।
2. पिछली कक्षा में क्षेत्रफल जानकारी का अभाव
3. एक प्रकार के मानकों को अन्य प्रकार के मानको में न बदल पाना।
4. आयत, वर्ग, घन, घनाभ आदि ज्यामितीय आकृतियों का ज्ञान न होना।

कार्ययोजनाः

1. मैट्रिक प्रणाली की जानकारी के लिये लम्बाई के पैमाने लिखवाना **तथा** अनुप्रयोग करवाना।
2. पिछली कक्षा के क्षेत्रफल संबंधी प्रश्नों को हल करवाना।
3. मीटर को सेमी. या अन्य मानकों में बदलना।
4. आयत, वर्ग, घन, घनाभ की आकृतियों को चार्ट बनवाना एवं उनकी पहचान करवाना।
5. विद्यालय तथा घर की विभिन्न वस्तुओं को नापना तथा क्षेत्रफल ज्ञात करना।
6. आयतन की जानकारी क्रियात्मक एवं व्यवहारिक रूप में देना।
7. परीक्षण/मूल्यांकन

क्रियान्वयन : (दिनांक 6.11.99 से 6–12–99 तक)

1. मैट्रिक प्रणाली की सामान्य जानकारी देकर विभिनन विशिष्ट इकाईयों की जानकारी बच्चों को दी गयी।
2. क्षेत्रफल संबंधी विभिन्न प्रश्नों को हल करवाया गया। क्षेत्रफल के सूत्र (क्षे. = ल. x चौ.) को समझाया एवं प्रयोग कराया गया तथा क्षेत्रफल की इकाई का ज्ञान कराया गया।
3. मीटर को अन्य एवं बड़ी इकाईयों में बदलने की क्रिया समझाया गया।
4. आयत, वर्ग, घन, घनाभ आदि आकृतियों के चार्ट बनवाकर उनका अन्तर स्पष्ट किया गया।
5. विद्यालय की विभिन्न वस्तुओं को नपवाकर उनके क्षेत्रफल का ज्ञान कराया गया।
6. आयतन की परिभाषा समझाकर आयताकार ठोस का आयतन निकालने के सूत्र (आयतन = ल. x चौ. x ऊं.) का अनुप्रयोग सिखाया गया।
7. घन का आयतन ज्ञात करना तथा घन की कोर की लम्बाइ ज्ञात करना समझाया गया।
8. आयतन की जानकारी क्रियात्मक एवं व्यवहारिक रूप से दी गयी।

निष्कर्ष

1. बच्चों को मैट्रिक प्रणाली का ज्ञान हो गया।
2. बच्चे सरलता से क्षेत्रफल के प्रश्नों को हल करने लगे।
3. मैट्रिक प्रणाली के विभिन्न मानकों को अन्य मानकों में बदलने की क्रिया सरलता से करने लगे
4. विभिन्न ज्यामितीय आकृतियों की पहचार सही ढंग से करने लगे।
5. आयतन संबंधी प्रश्नों को हल करने में बच्चे अब कठिनाई का अनुभव नहीं करते हैं।

● **समस्या समाधान हेतु कार्यनीति क्रियान्वयन के पश्चात् जो निष्कर्ष प्राप्त हुए उनका तुलनात्मक विवरण निम्नवत है:–**

क्र.सं.	पूर्व की स्थिति	पश्चात् की स्थिति
1.	बच्चों को आयतन तथा मैट्रिक प्रणाली का बहुत कम ज्ञान था।	अब बच्चे आयतन के प्रश्नों को सरलता से हल करने लगे हैं तथा मैट्रिक प्रणाली को समझ गये हैं।
2.	बच्चों को विभिन्न ज्यामीतिय आकृतियों की पहचान नहीं थी।	अब विभिन्न ज्यामीतिय आकृतियों को समझने लगे हैं।

शोधकार्य अनुभवों के प्रतिफलः

1. शोध कार्य की कार्ययोजना क्रियान्वयन में बच्चे विशेष रूचि ले रहे थे।
2. यह उपागम जहां एक ओर शिक्षक में विशिष्ट दक्षता का विकास करता है वहीं दूसरी ओर समस्या का समाधान करता है।
3. क्रियात्मक शोध उपागम शिक्षा में गुणात्मक सम्वर्द्धन हेतु बहुत ही कारगर विधा है।

शोधकर्ता का नामः : **श्रीमती शारदा यादव (सहायक अध्यापिका)**

विद्यालय का नामः : प्राथमिक विद्यालय धरतावाला
(सहसपुर), जनपद देहरादून

समस्या : कक्षा2 के बच्चों के लिये भाषा (हिन्दी) शिक्षण में सहायक शिक्षण सामग्री के प्रयोग में आ रही कठिनाईयों का अध्ययन एवं समाधान।

समस्या के कारण जिनका निदान किया गया :

1. सहायक शिक्षण सामग्री का अभाव
2. हिन्दी वर्णमाला के अक्षरों की सही पहचान न कर पाना।
3. अर्द्ध अक्षर एवं संयुक्ताक्षरों के उच्चारण करने तथा लिखने में त्रुटि करना।
4. नियमित रूप से विद्यालय में उपस्थित न होना।

कार्ययोजनाः

1. अक्षर कार्ड, शब्द कार्ड एवं वर्णमाला चार्ट बनाना।
2. अर्द्ध अक्षरों, संयुक्ताक्षरों एवं कठिन शब्दों के सचित्र कार्ड तैयार करना।
3. अक्षर कार्ड एवं शब्द कार्ड के माध्यम से खेल कराना।

क्रियान्वयन : (दिनांक 3.11.99 से 6–12–99 तक)

1. अपने स्टाफ की शिक्षिकाओं की सहायता से कक्षा 2 की भाषा की पुस्तक में छपे चित्रों को चार्ट पर रंगीन चित्र के रूप में तैयार किया गया।
2. हिन्दी वर्णमाला के सभी अक्षरों का अलग–अलग कार्ड तैयार किया गया।
3. भाषा की पुस्तक में कठिन शब्दों का रंगीन कार्ड तैयार किया गया।
4. अर्द्ध अक्षरों से बने शब्दों तथा संयुक्ताक्षरों का कार्ड तैयार किया गया।
5. उक्त सामग्री का खेल विधि, कहानी एवं गीत के माध्यम से प्रयोग किया गया।

निष्कर्ष

1. भाषा शिक्षण हेतु सहायक शिक्षण सामग्री की उपलब्धता हो गयी।
2. बच्चे हिन्दी वर्णमाला के अक्षरों को अच्छी तरह समझ गये, शुद्ध उच्चारण करने लगे तथा सही–सही लिखने लगे।
3. भाषा की पुस्तक के चित्रों के साथ बच्चे अनुक्रिया करने लगे तथा स्वयं पाठ पढ़ने में रूचि लेने लगे।
4. बच्चों की उपस्थिति नियमित होने लगी।

● समस्या समाधान हेतु कार्यनीति क्रियान्वयन के पश्चात् जो निष्कर्ष प्राप्त हुए उनका तुलनात्मक विवरण निम्नवत है:–

क्र.सं.	पूर्व की स्थिति	पश्चात् की स्थिति
1.	बच्चों को अक्षर ज्ञान नहीं था।	अक्षर ज्ञान हो गया।
2.	बच्चे पुस्तक नहीं पढ़ते थे।	पुस्तक पढ़ने लगे हैं।
3.	बच्चे पढ़ाई के प्रति रूचि नहीं रखते थे।	पढ़ाई के प्रति रूचि जागृत हुई।
4.	अभिभावक बच्चों के न पढ़ने की शिकायत करते थे।	अभिभावक संतुष्ट हैं, अब शिकायत नहीं करते थे।

शोधकार्य अनुभवों के प्रतिफलः

1. शोध कार्य की कार्ययोजना के क्रियान्वयन में मैंने काफी रोचकता महसूस किया।
2. पढ़ाने की क्रिया सरल हुई।
3. बच्चों में रटने के बजाय समझने की क्षमता का विकास हुआ।
4. विद्यालय स्तर पर पढ़ने तथा पढ़ाने के वातावरण का निर्माण हुआ।

शोधकर्ता का नामः : **श्री रणवीर सिंह नेगी (प्र. अध्यापक)**

विद्यालय का नामः : प्राथमिक विद्यालय नेहरूग्राम
(रायपुर), देहरादून

समस्या : कक्षा 4 के बच्चों को गणिता विषय की मूलभूत क्रियाओं का ज्ञान न होना, कारणों का अध्ययन एवं समाधान।

समस्या के कारण जिनका निदान किया गया :

1. कक्षा 3 में गणित की आदर्श जानकारी न होना।
2. स्थानीय मान की पूर्ण एवएं स्पष्ट ज्ञान न होना।
3. पहाड़े याद न होना।
4. जोड़, घटाना, गुणा भाग का अच्छी तरह से अभ्यास न होना।
5. गणिता विषय को नीरस या बोझ समझना।

कार्ययोजनाः

1. पुनरावृत्ति के प्रश्नों को हल कराना।
2. गिनती एवं पहाड़े अच्छी तरह से याद करवाना तथा उनका अनुप्रयोग समझाना।
3. स्थानीय मान का ज्ञान कराना।
4. उपयुक्त शिक्षण विधि का प्रयोग करना।
5. कक्षा कार्य एवं गृह कार्य की नियमित जांच करना।
6. ग्राम शिक्षा समिति की बैठक में बच्चों की शैक्षिक कठिनाईयों पर चर्चा करना।
7. परीक्षण/ मूल्यांकन।

क्रियान्वयन : (दिनांक 1.11.99 से 6–12–99 तक)

1. प्रत्येक दिन 20मिनट अतिरिक्त कक्षा शिक्षण का आयोजन किया गया।
2. कक्षा 3 के विविध प्रश्नावली के प्रश्नों को हल करवाया गया।
3. 1 से 100 तक गिनती तथा 2 से 20 तक पहाड़े का चार्ट तैयार कराया गया।
4. गिनती का अनुप्रयो जोड़ एवं घटाने में तथा पहाड़े का अनुप्रयोग गुणा तथा भाग में करवाकर बार–बार अभ्यास कराया गया।
5. साधारण एवं दशमलव से संबंधित संख्याओं के स्थानीय मान की जानकारी हेतु अभ्यास करवाया गया।
6. ग्राम शिक्षा समिति की बैठक में बच्चों की कठिनाईयों पर अभिभावकों से चर्चा की गयी।
7. कार्य योजना के क्रियान्वयन के पश्चात परीक्षण/मूल्यांकन किया गया।

निष्कर्ष

1. सभी बच्चे जोड़, घटाना, गुणा भाग अच्छी तरह से हल करने लगे।
2. कक्षा 3 के विविध प्रश्नावली के प्रश्नों को हल करने में सक्षम हो गये।
3. स्थानीय मान की जानकारी हो गयी।
4. बच्चे गणित की संक्रियाओं में रूचि लेने लगे।
5. अभिभावक सजग हरे गये हैं।

● **समस्या समाधान हेतु कार्यनीति क्रियान्वयन के पश्चात् जो निष्कर्ष प्राप्त हुए उनका तुलनात्मक विवरण निम्नवत है:–**

क्र.सं.	पूर्व की स्थिति	पश्चात् की स्थिति
1.	कक्षा 3 में गणित के प्रश्नों को हल करने में बच्चे कठिनाई महसूस करते थे।	अब कक्षा 3 के विविध प्रश्नावली के सभी प्रश्नों को हल करने लगे हैं।
2.	स्थानीय मान की जानकारी नहीं थी।	स्थानीय मान की जानकारी हो गयी है।
3.	गणित विषय को नीरस समझते थे।	अब गणित विषय में रूचि लेने लगे हैं

शोधकार्य अनुभवों के प्रतिफल:

1. क्रियात्मक शोध उपागम के प्रयोग के फलस्वरूप मैं बच्चों की गणित विषय में रूचि जागृत करने में सफल हुआ।
2. इस विधा के माध्यम से बच्चों की कठिनाईयों को दूर करने के साथ–साथ शिक्षक अपनी आदर्श स्थिति को प्राप्त करने में समर्थ हो सकता है।